Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

**अल्लाह तआला का आदेश**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

वर्ष- 6
अंक- 32

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
# बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

25 ज़विल हज्ज 1442 हिज्री कमरी 12 ज़हूर 1400 हिज्री शम्सी 12 अगस्त 2021 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

**आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें**

## ज़कात गरीबों का हक़

**यथा उचित माल खर्च करने तथा ज्ञान सिखाने का महत्व**

(1409) हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है उन्होंने कहा मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे : ईर्ष्या नहीं करना चाहीए परन्तु दौ ही (आदमीयों) पर। एक वह व्यक्ति जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया हो और फिर उस को उचित स्थान पर ख़र्च करने की तौफ़ीक़ दे और वह व्यक्ति जिसको अल्लाह तआला ने सही ज्ञान दिया हो और वह ख़ुद भी इस पर अमल करता है और लोगों को भी सिखाता है।

**सदक़ा व ज़कात पवित्र माल से देना**

(1410) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस व्यक्ति ने पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी सदक़ा दिया और अल्लाह पवित्र चीज़ ही क़बूल करता है और अल्लाह उस सद्के को अपने दाएं हाथ से स्वीकार करता है। फिर सदक़ा देने वाले के लिए उस को बढ़ाता है , इसी तरह जिस तरह कि तुम में से कोई अपना बिछड़ा हुआ पा लेता है। यहां तक कि वह (सदक़ा)पहाड़ के बराबर हो जाता है।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

**जो व्यक्ति यह समझता है कि मैं उनको सता कर और दुख देकर भी आराम पा सकता हूँ वह सख़्त ग़लती करता है और नफ़्स उसको धोखा दे रहा है।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह नियम की बात है कि जब कोई व्यक्ति किसी से मुहब्बत करता हो, ऐसी मुहब्बत जैसे कोई अपनी औलाद से करता है। और एक और व्यक्ति बार-बार कहे कि यह मर जाए या और इसी प्रकार का दिला को कष्ट पहुंचाने की बातें करे और उसे कष्ट दे तो वह व्यक्ति उससे कैसे ख़ुश हो सकता है और वह बाप जिसके बच्चे के लिए वह व्यक्ति बद-दुआएँ कर रहा है या कष्ट पहुचाने वाले शब्द उसके बारे में कह रहा है ऐसे व्यक्ति से कब मुहब्बत कर सकता है? इसी तरह पर औलिया अल्लाह भी अल्लाह के बच्चों जैसा रंग रखते हैं,क्योंकि उन्होंने जिस्मानी रूप से वयस्क होने का चोला उतार दिया है और अल्लाह तआला की आग़ोश रहमत में लालन पालन करते हैं। वह उनका मुतवल्ली ,मुतकफ़्फ़िल और उनके लिए ग़ैरत रखने वाला होता है। जब कोई व्यक्ति (चाहे वह कैसा ही नमाज़, रोज़ा रखने वाला हो)उनका विरोध करता है और उनके दुख देने पर तत्पर हो जाता है तो अल्लाह तआला की ग़ैरत जोश मारती है और उनका विरोध करने वालों पर उस का ग़ज़ब भड़कता है। इस लिए कि उन्होंने उसके एक महबूब को दुख देना चाहा है। उस वक़्त फिर न वह नमाज़ काम आती है न रोज़ा। क्योंकि नमाज़ और रोज़ा के माध्यम से उसी ज़ात को ख़ुश करना था जिस को एक दूसरे कर्म से नाराज़ कर लिया है। फिर वह प्रसन्नता का स्थान कैसे मिले जब तक इलाही ग़ज़ब दूर न हो। और वह अज्ञान इन ग़ज़ब के माध्यमों से अज्ञान होता है,बल्कि अपने नमाज़ रोज़ा पर उसे एक गर्व और घमंड होता है नतीजा यह होता है कि ख़ुदा तआला का ग़ज़ब दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है और वह बजाय उसके क़ुरब प्राप्त करने के दिन प्रतिदिन अल्लाह तआला से दूर हटता जाता है। यहां तक कि बिलकुल दरगाह से छुतकारा हुआ हो जाता है। इस तरह पर वह व्यक्ति जो बिलकुल फ़ना की हालत में है और इलाही आस्ताना पर गिरा हुआ है और रबूबियत की आग़ोश में परवरिश पा रहा है और ख़ुदा तआला की रहमत ने उसे ढाँप लिया है। यहां तक कि उस का बात करना ख़ुदा का बात करना होता है। उस का दोस्त ख़ुदा का दोस्त और उसका दुश्मन ख़ुदा का दुश्मन हो जाता है। अत: ख़ुदा तआला का दुश्मन रह कर कोई व्यक्ति मोमिन कामिल कैसे हो सकता है। इस तरह पर इस का ईमान छीना जाता है और उसे मग़ज़ूब अलैहिम में से बना देता है। ख़ुदा तआला के मामूरों और औलिया अल्लाह का विरोध और उनको कष्ट पहुचाना कभी अच्छा फल नहीं दे सकता। जो व्यक्ति यह समझता है कि मैं उनको सता कर और दुख देकर भी आराम पा सकता हूँ वह सख़्त ग़लती करता है और नफ़्स उसको धोखा दे रहा है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

## नबी ख़ुदा के फ़ज़ल से मासूम होता है तो फिर उसके اِغْفِرْلِیْ कहने का क्या अर्थ?

### मौमिन के अलग-अलग दर्जात के लिहाज़ से اِغْفِرْلِیْ के अलग-अलग अर्थ

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: इब्राहीम आयत नम्बर 42 رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

नबी ख़ुदा के फ़ज़ल से मासूम होता है फिर नबी का यह कहना कि اِغْفِرْلِیْ इस का क्या अर्थ? वास्तव में जो अल्लाह वाले नहीं होते उन लोगों की नज़र सीमित होती है। उस की नज़र इन्सान तक ही जाती है और इन्सान तक ही तसल्ली पा जाती है परन्तु अल्लाह वालों की नज़र ऊपर जाती है और बुलंद होती जाती है। वह समझ लेता है कि बंदे की अल्लाह तआला के मुक़ाबले में क्या हस्ती है। सूरज के सामने एक कण की क्या हैसियत है। क्योंकि आख़िर इन्सान उसी की मख़लूक़ है। उसकी ज़िंदगी भी अल्लाह तआला की प्रदान की हुई है और हिदायत भी उसी की तरफ़ से आती है। ग़ालिब ने क्या ही उम्दा कहा है

जान दी दी हुई उसी की थी हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

अत: नबी चूँकि आरिफ़ होता है वह अपनी हस्ती को देखता है और जानता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह मैं नहीं बल्कि ख़ुदा ही कर रहा है। इस लिए वह दुआ करता है कि हे अल्लाह मेरे वजूद को ज़्यादा से ज़्यादा गुप्त कर दे और अपने वजूद को ज़्यादा से ज़्यादा ज़ाहिर फ़र्मा। मानो اِغْفِرْلِیْ के इस सूरत में यह अर्थ होते हैं कि हे ख़ुदा तुझे मेरी ही मुहब्बत का वास्ता है कि अपना पर्दा मुझ पर डाल दे। अर्थात मेरा वजूद मिटा कर तेरा वजूद मेरे माध्यम से ज़ाहिर होने लगे और

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# प्रश्न उत्तर

## सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

## बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 3)

## किसी चीज़ के हलाल या हराम होने के बारह में इस्लाम के नियम का वर्णन

**प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में इस्तिफ़सार किया कि इस्लाम में मुख़्तलिफ़ जानवरों का गोश्त किस बिना पर हलाल और हराम क़रार दिया जाता है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 11अप्रैल 2016 ई. में इस का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : किसी चीज़ के हलाल या हराम होने के बारह में दीन-ए-इस्लाम का उसूल ये है कि हर वह काम जिससे शरीयत मना न करे, जायज़ है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम फ़रमाते हैं

"असल वस्तुओं में जाएज़ होना है निषेध जब तक स्पष्ट प्रमाणों से प्रमाणित न हो तब तक नहीं होती।" (मलफ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 474)

क़ुरआन-ए-करीम ने मुर्दार, बहता हुआ ख़ून, सूअर का गोश्त और ग़ैर अल्लाह के नाम पर ज़िबह किया जाने वाला जानवर हराम क़रार दिया है।

(सूर: अल् इनाम : 146)

क़ुरआन-ए-करीम की वर्णन की गई इन चार वस्तुओं को हराम कहा जाता है। जबकि कुछ वस्तुओं के खाने से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है उनको मना कहा जाता है। जैसे जो जानवर शिकारी है वह मना है। इस में दरिंदे, शिकारी परिंदे इत्यादि सब दाख़िल हैं। इन वस्तुओं की मनाही हदीसों पर आधारित है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है

نَهَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ ذِى نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَعَنْ كُلِّ ذِى مِخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ

(صحيح مسلم كتاب الصَّيْدِ وَالذَّبَائِحِ وَمَا يُؤْكَلُ مِنَ الْحَيَوَانِ باب تَحْرِيمِ أَكْلِ كُلِّ ذِى نَابٍ ...)

अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर कुचलियों वाले दरिंदे और पंजों वाले परिंदे का खाना मना क़रार दिया है। इसी तरह हदीस में आया है

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ(صحيح بخارى كتاب المغازى باب غَزْوَةِ خَيْبَرَ)

अर्थात हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के युद्ध के अवसर पर पालतू गधों का गोश्त खाने से मना फ़रमाया।

हराम और मनाही की वज़ाहत करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं

"यह बात याद रखनी चाहिए कि शरीयत-ए-इस्लामीया में जिन वस्तुओं के खाने से मना किया गया है वह दो किस्म की हैं। अव्वल हराम, दोम निषेध। शब्दकोष में तो हराम का लफ़्ज़ दोनों किस्मों पर हावी है। लेकिन क़ुरआन-ए-करीम ने इस आयत (अल् बक़र: : 174) में केवल चार चीज़ों को हराम क़रार दिया है। अर्थात मुर्दार, ख़ून, सूअर का गोश्त और वे समस्त चीज़ें जिन्हें अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और के नाम से नामित कर दिया गया हो। इनके अतिरिक्त भी शरीयत में कुछ और चीज़ों के इस्तिमाल से रोका गया है। लेकिन वे चीज़ें निषेध की लिस्ट में तो आएँगी , क़ुरआन की इस्तिलाह के अनुसार हराम नहीं होंगी।

यह आदेशों इस आयत या दूसरी आयात के मज़मून के वपरीत नहीं हैं। क्योंकि जिस तरह अवामिर कई किस्म के हैं कुछ फ़र्ज़ हैं, कुछ वाजिब हैं और कुछ सुन्नत हैं। इसी तरह नही भी कई अक़साम हैं। एक नही मोहरिमा है और एक नही माने है और एक नही तन्ज़ीही है। अत: हराम चार वस्तुएं हैं बाक़ी ममनू हैं और उनसे भी ज़्यादा वे हैं जिनके सम्बन्ध में नही तन्ज़ीही है अर्थात बेहतर है कि इन्सान उनसे बच्चे। हराम और ममनू में वही सम्बन्ध है जो फ़र्ज़ और वाजिब में है। अत: जिन वस्तुओं को क़ुरआन-ए-करीम ने हराम कहा है उनकी हुर्मत ज़्यादा सख़्त है और जिन से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना किया है वे हुर्मत में उनसे निसबतन कम हैं। और जैसा कि मैंने बताया है आदेशों में उनकी मिसाल फ़र्ज़ और वाजिब और सुन्नत की सी है हराम तो बमंज़िला फ़र्ज़ के है और मना बमंज़िला वाजिब के। जिस तरह फ़र्ज़ और वाजिब में अंतर उनकी सज़ाओं की दृष्टि से किया जाता है इसी तरह जिन वस्तुओं की हुर्मत क़ुरआन-ए-करीम में आई है यदि इन्सान उन को इस्तिमाल करेगा तो उस की सज़ा ज़्यादा सख़्त होगी। और जिनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है उनके इस्तिमाल से इस से कम दर्जा की सज़ा मिलेगी लेकिन बहर-ए-हाल दोनों जुर्म क़ाबिल गिरिफ़्त और अल्लाह तआला की नाराज़गी का मूजिब होंगे। हराम कार्य करने से इन्सान के ईमान पर-असर पड़ता है और इस का नतीजा लाज़िमन बुराई होती है। लेकिन दूसरी चीज़ों के इस्तिमाल का नतीजा लाज़िमन बदी और बेईमानी के रंग में नहीं निकलता। इसलिए देख लो। मुस्लमानों में से कुछ ऐसे फ़िरक़े जो इन वस्तुओं को मुख़्तलिफ़ तावीलात के ज़रीये जायज़ समझते और उन्हें खा लेते हैं जैसे मालकी, उनका असर उनके ईमान पर नहीं पड़ता और उनमें बेईमानी और बदी पैदा नहीं होती। बल्कि पिछले समय में तो उनमें अल्लाह के पवित्र बंदे (अवतार) भी पैदा होते रहे हैं। लेकिन ख़िंज़ीर का गोश्त या मुर्दार खाने वाला कोई व्यक्ति अल्लाह के पवित्र बंदा (अवतार) नज़र नहीं आएगा। अत: हुर्मत के भी मदारिज हैं और उन चारों हराम चीज़ों के अतिरिक्त बाक़ी समस्त ममनूआत हैं जिनको आम इस्तिलाह में हराम कहा जाता है अन्यथा क़ुरआन की इस्तिलाह में वे हराम नहीं हैं।"

(तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 340)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो हलाल-ओ-हराम का फ़लसफ़ा वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन में आया है। لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ

यह ख़ुदा पर झूठा आरोप लगाना है कि यह हलाल है या हराम। ख़ुदा ने फ़रमाया है:

حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللهِ۔

हदीस शरीफ़ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। कि जो जानवर शिकारी है वह हराम है। इस में दरिंदे, शिकारी पक्षी इत्यादि सब शामिल हैं। अब इस से ज़्यादा कोई प्राधिकारी नहीं कि किसी को हलाल और हराम कहे। परन्तु दुनिया में चूँकि हज़ारों जानवर हैं फिर यह दिक़्क़त हुई कि अब किसे खाएं और किसे न खाएं। इस मुश्किल को अल्लाह तआला ने निहायत आसानी से हल कर दिया है।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاشْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ۔

अर्थात हलाल पवित्र खाओ। अब जबकि यह बता दिया कि जो चीज़ तुय्यब हो वह खाओ इसलिए हर जगह हर क़ौम में जो चीज़ें उम्दा और पवित्र हों और शरीफ और शिष्टाचारी लोग खाते हो वे खा लो। इस में वह इस्तिस्ना जो पहले वर्णन हो चुके उनका मलहूज़ रखना निहायत ज़रूरी है। तोता खा लेने में कोई हर्ज नहीं मालूम होता है। परन्तु मैं नहीं खाया करता क्योंकि हमारे मुल्क के शारीफ नहीं खाते एक दफ़ा एक साहिब मेरे सामने (गोह) पक्का कर लाए कि खाइए मैंने कहा आप बड़ी ख़ुशी से मेरे दस्तरखान पर खाइए परन्तु मैं नहीं खाऊंगा क्योंकि "शरीफ लोग इसे नहीं खाते।

(अख़बार नंबर 19 भाग 10 तिथि 9 मार्च 1911ई. पृष्ठ 1)

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

# ख़ुत्बः जुमअः

**हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अदालत में बराबरी और इन्साफ़ का लिहाज़ रखने की तलक़ीन फ़रमाई**

**हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कानून-ए-शरीयत की जानकारी के लिए विभाग इफ्ता का आरंभ फ़रमाया और कुछ सहाबा को मनोनीत फ़रमाया कि उनके अतिरिक्त किसी से फ़तवा नहीं लिया जाएगा**

**हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुल्क में शांति क़ायम रखने की ख़ातिर اَحْدَاث अर्थात पुलिस का विभाग स्थापति फ़रमाया**

## आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

**जो चाहता है कि वह اَلْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ अर्थात क़वी और अमानतदार को देखे तो इस व्यक्ति (उमर रज़ियल्लाहु अन्हो) को देख ले**
**हे लोगो! उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और उस की ऑल के लिए चाहे वे क़रीबी हो या दूर उनका उतना ही हक़ है जितना आम मुस्लमानों का है, इस से ज़्यादा का नहीं (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो)**

**हज़रत उमर रज़ियल्लाहु रज़ि अल्लाह अन्हो के चौवालीस सर्व प्रथम किए जाने वाले कार्यों का वर्णन**

**छः मरहूमीन आदरणीय सर-ए-पतो हादी सस्वविवेव साहिब आफ़ इंडोनेशिया, आदरणीय चौधरी बशीर अहमद भट्टी साहिब इब्नुल्लाह दाद साहिब भोड़ो ज़िला ननकाना साहिब, आदरणीय हमीदुल्लाह ख़ादिम मुल्ही साहिब रब्वाह, आदरणीय मुहम्मद अली ख़ान साहब पिशावर, आदरणीय साहिबज़ादा मह्दी लतीफ़ साहिब आफ़ मेरीलैंड अमरीका, प्रिय फ़ैज़ान अहमद समीर इब्न शहज़ाद अकबर साहिब कर्मचारी दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी रब्वाह का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 जुलाई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन हो रहा था। विभाग क़ज़ा के आरंभ के बारे में रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाक़ायदा क़ज़ा के विभाग का आरंभ फ़रमाया। समस्त राज्यों में बाक़ायदा अदालतें क़ायम कीं और क़ाज़ी निर्धारित किए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ज़ा के सम्बन्ध में क़ानूनी आदेश भी जारी फ़रमाए।

(उद्धरित फुर्कान शिबली नुमानी से, पृष्ठ 195 से 198 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004)

क़ाज़ियों के चुनाव में फ़िक़्ह के माहिरीन को चुना किया जाता लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी पर इकतिफ़ा नहीं करते थे बल्कि उनकी परीक्षा भी लेते थे। क़ाज़ियों की उचित वेतन निर्धारित फ़रमाते ताकि कोई ग़लत फ़ैसला न कर दे। दौलतमंद और सम्मानित व्यक्ति को क़ाज़ी निर्धारित फ़रमातेता कि फ़ैसले के समय किसी के रोब में न आ सके। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अदालत में बराबरी और इन्साफ़ का लिहाज़ रखने की तलक़ीन फ़रमाई। एक दफ़ा हज़रत उबैय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ किसी किस्म का झगड़ा था। हज़रत उबैय रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो की अदालत में मुक़द्दमा कर दिया। ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और उबैय को बुलाया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ताज़ीम की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया यह तुम्हारा पहला ज़ुलम है। यह कह कर उबैय रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ जा कर बैठ गए।

(उद्धरित फ़ारूक़ शिबली नुमानी से, पृष्ठ 199- 200 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004 ई.)

अर्थात कि हम दोनों अब फ़रीक़ हैं। फ़रीक़ैन को फ़रीक़ की तरह देखो और साथ-साथ बिठाओ, न कि मुझे इज़्ज़त दो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस वाक़िया का वर्णन करते हुए इस प्रकार वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा सानी का एक दफ़ा एक झगड़ा उबैय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो से हो गया था। क़ाज़ी के पास मुआमला पेश हुआ। उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलवाया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के आने पर (काज़ी ने) अपनी जगह अदब से छोड़ दी" कि यह ख़लीफ़-ए-वक़्त हैं। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रीके़ मुख़ालिफ़ के पास जा बैठे और क़ाज़ी से फ़रमाया कि यह पहली बे इंसाफ़ी है जो आपने की है। इस वक़्त मुझमें और मेरे फ़रीक़ मुख़ालिफ़ में कोई अंतर नहीं होना चाहीए था।"

(अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल उलूम,भाग 8 पृष्ठ 300)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इफ्ता का विभाग भी जारी फ़रमाया। कानून-ए-शरीयत की जानकारी के लिए विभाग इफ्ता का जारी फ़रमाया और कुछ सहाबा को मनोनीत फ़रमाया कि उनके अतिरिक्त किसी से फ़तवा नहीं लिया जाएगा। उनमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो अर्थात फ़तवा देने वालों में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उबेय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू हुरेयराह ज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू दर्दा ज़ियल्लाहु अन्हो थे। इन लोगों के सिवा यदि कोई और फ़तवा देता तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसे मना कर देते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इन फ़तवा देने वालों की भी समय समय पर जांच करते रहते थे।

(उद्धरित फ़ारूक़ शिबली नुमानी से, पृष्ठ 202 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं एक सीग़ा फ़तवा का है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद ज़माना खुलफ़ा के समय में क़ायदा था कि शरई विषयों में फ़तवा देने की हर व्यक्ति को आज्ञा नहीं थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो तो इतनी एहतियात करते थे कि एक सहाबी, शायद अब्दुल्ल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो थे, जो दीनी उलूम में बड़े माहिर भी थे और एक जलील-उल-क़दर इन्सान थे उन्होंने एक दफ़ा कोई मसला लोगों को बताया और इस की सूचना आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पहुंची अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जब इस की सूचना पहुंची तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तुरंत उनसे उत्तर माँगा कि क्या तुम अमीर हो या अमीर ने तुम को निर्धारित किया है कि फ़तवा देते हो? वास्तव में यदि हर एक व्यक्ति को फ़तवा देने का हक़ हो तो बहुत सी मुश्किलात पैदा हो सकती हैं और लोगों के लिए बहुत से फतावा परेशानी का कारण बन सकते हैं क्योंकि कभी कभी एक ही विषय के सम्बन्ध में दो अलग-अलग फ़तवे होते हैं और दोनों सही होते हैं। अर्थात कि हालात के अनुसार फ़तवा दिया जाता है। मसायल को यदि गहराई से देखा जाए तो उस में लचक होती है इस सूरत में यह फ़तवा होगा और उस सूरत में यह फ़तवा होगा परन्तु लोगों के लिए यह समझना मुश्किल हो जाता है कि दोनों किस तरह दरुस्त हैं। इसलिए वे फिर परेशानी में पड़ जाते हैं।

(उद्धरित ख़िताब जलसा सालाना 17 मार्च 1919 ई., अनवारुल उलूम,भाग 4

पृष्ठ 404)

फिर इसी तरह विभाग पुलिस का आरंभ किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुल्क में शांति क़ायम रखने की ख़ातिर اَحْدَاثْ अर्थात पुलिस का विभाग क़ायम फ़रमाया। इस विभाग को एहतसाब, शांति-ओ-अमान, बाज़ार की निगरानी इत्यादि के अधिकारी दिए थे अर्थात कि लोगों को देखना कि वे सही तरह बातों पर अमल दरआमद कर रहे हैं कि नहीं। किसी के हक़ मारे जा रहे हैं तो उनकी अदायगी करवाना। जो इंतिज़ामी मुआमलात थे उन्हें देखना जब तक मुआमला क़ाज़ी के पास नहीं जाता। शांति-ओ-अमान, बाज़ार की निगरानी इत्यादि, ये सारे निगरानी के अधिकारी थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाक़ायदा जेलें भी बनवाईं। इस से पूर्व जेलों का रिवाज नहीं था। कठोर सज़ाएं भी मुजरिमों को दी जाती थीं।

फिर इसी तरह बैतुल माल का क़ियाम है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूर्व जो भी माल आता वे फ़ौरी तक़सीम हो जाता। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में एक मकान ख़रीद कर बैतुल माल के लिए वक़्फ़ किया गया लेकिन वह बंद ही रहता था क्योंकि जो भी माल आता उसी वक़्त तक़सीम हो जाता। 15 हिज्री में बेहरीन से पाँच लाख की रक़म आई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहाबा से सुझाव किया कि इस रक़म का क्या-किया जाए। एक राय यह थी कि सलातीन शाम में खज़ाने का विभाग क़ायम है। इस लिए इस राय को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पसंद फ़रमाया और मदीना में बैतुल माल की बुनियाद डाली। हज़रत अब्दुल्ल्लाह बिन अर्क़म को खज़ाने का अफ़्सर निर्धारित किया गया। बाद में मदीना के अतिरिक्त समस्त राज्यों और उनके सदर क्षेत्रों में बैतुल माल क़ायम किए गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इमारतों की तामीर में मितव्यय से काम लेते थे परन्तु बैतुल माल के लिए निहायत मज़बूत और शानदार इमारतें बनवाया करते थे। बाद में उन पर पहरेदार भी निर्धारित किए गए थे।

(उद्धरित फ़ारूक़ नुमानी, पृष्ठ 203से 205 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004ई.)

इस के लिए सैक्योरिटी का पूरा निज़ाम था। बैतुल माल के माल के सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद हिफ़ाज़त फ़रमाते थे। एक वाक़िया तारीख़ में आता है कि हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हो के एक आज़ाद करदा ग़ुलाम वर्णन करते हैं कि एक दिन शदीद गर्मी थी। मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ "आलीया" स्थान में उनके माल पशुओं के पास था। मदीना से नजद की ओर चार से आठ मील के मध्य की वादी है इसे "आलीया" कहते हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक आदमी को देखा जो दो नौजवान ऊंट हाँक कर ले जा रहा था अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि एक आदमी आ रहा है और जवान ऊंट उस के आगे आगे चल रहे हैं और ज़मीन शदीद गर्म थी। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उस व्यक्ति को क्या हुआ है! यदि यह मदीना में रहता और मौसम ठंडा होने के बाद निकलता तो उस के लिए बेहतर होता। जब वह व्यक्ति क़रीब आया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के कर्मचारी कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझ से फ़रमाया कि देखो यह कौन है? मैंने कहा चादर में लिपटा हुआ एक व्यक्ति है जो दो नौजवान ऊंट हाँक रहा है। फिर वह व्यक्ति और क़रीब हुआ तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हों फिर फ़रमाया कि देखो कौन है? मैंने देखा तो वह हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो थे। मैंने अर्ज़ की कि यह तो अमीरुल मोमनीन हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और दरवाज़े में से सिर बाहर निकाला लेकिन गर्म हवा की लपट पड़ी तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सिर अंदर कर लिया और फिर तुरंत ही दुबारा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मुँह कर के अर्ज़ किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को किस मजबूरी ने इस वक़्त घर से निकाला है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया सदक़े के ऊंटों में से यह दो ऊंट पीछे रह गए थे उनके अतिरिक्त बाक़ी सारे ऊंट हाँक कर ले जाए जा चुके थे तो मैंने चाहा कि इन को चरागाह में ले जाऊं। मुझे डर था कि ये दोनों खो जाऐंगे। फिर अल्लाह मुझ से उनके बारे पूछेगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे अमीरुल मौमिनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो साए में आएं और पानी पियें। हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए काफ़ी हैं। हम ख़िदमत कर लेते हैं। हम भेजने का इंतिज़ाम कर देते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: अपने साय में लौट जाओ, तुम जाओ साय में बैठो। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम कहते हैं कि मैंने निवेदन किया: हमारे पास वह है जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए काफ़ी है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अपने साय की तरफ़ लौट जाओ। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो चले गए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा जो चाहता है कि वह اَلْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ अर्थात क़वी और अमानतदार को देखे तो इस व्यक्ति को देख ले।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि अम्र बिन नाफ़े ने अबू बकर ईसा से रिवायत कर के वर्णन किया। वह कहते थे में हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसमान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ सदक़े के वक़्त आया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो साए में बैठ गए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो उनके पास खड़े हो कर वे बातें उनसे कहते जाते जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो बावजूद सख़्त गर्मी के दिन होने के धूप में खड़े थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास दो स्याह चादरें थीं। एक की तहबंद बांध ली थी और एक सिर पर डाल ली थी और सदक़े के ऊंटों का अध्यन कर रहे थे और ऊंट के रंग और उनकी आयु लिखते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि अल्लाह की किताब में तुमने हज़रत शुऐब की बेटी का यह कथन सुना है? इन خَیْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ (अल्ल कसस : 27) निसंदेह जिन्हें भी तू नौकर रखे उनमें बेहतरीन वही साबित होगा जो मज़बूत और अमानतदार हो। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ इशारा कर के कहा ये वही اَلْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ है।

(आसदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल साहाब,भाग 3 पृष्ठ 667 अम्र बिन ख़त्ताब, प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2003 ई.) (उम्दतुल काहिरा शरह सही अल्ल बुख़ारी, भाग 16 पृष्ठ 279 प्रकाशन दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में वाक़िया वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक वाक़िया है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं। वह कहते हैं मैं एक दफ़ा बाहर क़ुब्बा में बैठा हुआ था और इतनी शदीद गर्मी पड़ रही थी कि दरवाज़ा खोलने की भी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि इतने में मेरे ग़ुलाम ने मुझे कहा देखिए इस शदीद धूप में बाहर एक व्यक्ति फिर रहा है। मैं ने पर्दा हटा कर देखा तो मुझे एक व्यक्ति नज़र आया जिसका मुँह शिद्दत-ए-गर्मी की वजह से झुलसा हुआ था। मैंने उस से कहा कि कोई यात्री होगा परन्तु थोड़ी देर ही गुज़री थी कि वह व्यक्ति मेरे क़ुब्बा के क़रीब पहुंचा और मैंने देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। उनको देखते ही मैं घबरा कर बाहर निकल आया और मैंने कहा इस वक़्त गर्मी में आप कहाँ? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाने लगे बैतुल माल का एक ऊंट गुम हो गया था जिसकी तलाश में मैं बाहर फिर रहा हूँ।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 8 पृष्ठ 314-315)

ऊंट के गुमने का यह भी एक वाक़िया आता है। पहले भी एक दफ़ा वर्णन हो चुका है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा बैतुल माल का माल तक़सीम कर रहे थे कि उनकी एक बेटी आ गई और उसने इस माल में से एक दिरहम उठा लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसे लेने के लिए उठे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के एक कंधे से चादर ढलक गई और वह बच्ची अपने घर वालों के पास रोती हुई भाग गई और वह दिरहम उसने अपने मुँह में डाल लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उंगली डाल कर उसके मुँह से वह दिरहम निकाला और इस को माल में ला कर रख दिया और कहा हे लोगो! उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और उसके घरवालों के लिए चाहे वह क़रीबी हो या दूर के उनका इतना ही हक़ है जितना आम मुस्लमानों का है। इस से ज़्यादा का नहीं। एक और रिवायत है। हज़रत अबू मूसा ने एक दफ़ा बैतुल माल में झाड़ू दिया तो उनको एक दिरहम मिला। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक छोटा बच्चा गुज़र रहा था तो उन्होंने वह इस को दे दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह दिरहम इस बच्चे के हाथ में देख लिया तो आपने इसके बारे में पूछा : उसने कहा कि यह मुझे अबू मूसा ने दिया है तो यह मालूम कर लेने के बाद कि दिरहम बैतुल माल का है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि हे अबू मूसा! क्या अहल मदीना में से ऑल-ए-उमर के घर से ज़्यादा हक़ीर तर तेरे नज़दीक कोई घर नहीं था। तू ने यह चाहा कि उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई भी बाक़ी नहीं रहे परन्तु वह हमसे इस ज़ुलम का मुतालिबा करे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने वह दिरहम बैतुल माल में लौटा दिया। (ماخوذ از ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء مترجم اشتیاق احمد صاحب، جلد3، صفحہ286، قدیمی کتب خانہ آرام باغ کراچی)

लोगों की भलाई के कामों के बारे में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों की भलाई और बेहतरी के लिए बहुत से काम सरअंजाम फ़रमाए जो निमंलिखित हैं।

खेती बाड़ी में बेहतरी और लोगों के लिए पानी प्रदान करने के लिए नहरें खुदवाई (1) नहर अबू मूसा : दरयाए दज्ला से नौ मील लंबी नहर बना कर बस्रा तक लाई गई। (2) नहर माअकल : यह नहर भी दरयाए दज्ला से निकाली गई थी। (3) नहर अमीरुल मौमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म से दरिया-ए-नील को बहीरा-ए-क़ुलज़म से मिलाया गया। अठारह हिज्री में जब सूखा फैला तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को इमदाद के लिए ख़त लिखा। फ़ासिला चूँकि ज़्यादा था इसलिए सहायता में देरी हो गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अम्र को बुला कर कहा कि दरिया-ए-नील को समुंद्र से मिला दिया जाए तो अरब में कभी सूखा नहीं होगा। अम्र ने जो वहां के गवर्नर थे वापिस जा कर फ़सतात से बहीर-ए-क़ुलज़ुम तक नहर तैयार करवाई जिसके माध्यम से समुद्री जहाज़ मदीना की बंदरगाह जद्दा तक पहुंच जाते। यह नहर उनत्तीस मील लंबी थी और छः माह के अरसा में तैयार कर ली गई। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने बहीरा-ए-रुम और बहीरा-ए-क़ुलज़ुम को आपस में मिलाने का इरादा किया और चाहा कि फरमा के पास से जहां बहर-ए-कुल्जुम और बहर-ए-रुम में सत्तर मील का फ़ासिला था नहर निकाल कर उनको मिला दिया जाए। फ़र मिस्र के करीब में एक साहिली शहर था। लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यूनानियों के हाथों हाजियों के लुटे जाने के डर से इस पर रज़ामंद नहीं हुए। यदि अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो को आज्ञा मिल जाती तो नहरे सुईस की ईजाद अरबों के हिस्सा में आती जो बाद में बनाई गई थी।

अलग-अलग निर्माण। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों की सहूलत के लिए अलग-अलग इमारतें तामीर करवाईं। उनमें मसाजिद, अदालतें, फ़ौजी छावनियां, बेरिक्स, मुल्की निर्माण के कामों के लिए अलग-अलग दफ़ातिर, सड़कें, पुल, मेहमान ख़ाने, चौकियां, सराएं इत्यादि। मदीना से मक्का तक हर मंज़िल पर चश्मे और सराएं बनवाईं, चौकियां भी तामीर करवाईं।

(उद्धरित फ़ारूक़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 206 से 210 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004 ई.)

अर्थात सैक्योरिटी का भी इंतिज़ाम रहे और लोगों की रिहायश के लिए, आराम करने के लिए होटल इत्यादि भी, सराय भी मयस्सर आ जाएं।

शहरों की आबाद कारी के बारे में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने ख़िलाफ़त के समय में बहुत सारे नए शहर आबाद फ़रमाए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको आबाद करते वक़्त रक्षात्मक, आर्थिक फ़वायद को समक्ष रखा। इन शहरों के में निर्माण का इंतिज़ाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की जंगी बसीरत, सियासत और आबादकारी के उसूलों पर, बारीक नज़र पर दलालत करता है। यह शहर हालत-ए-जंग और हालत-ए-शांति दोनों में फ़ायदेमंद थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की कोशिश होती कि अरब की जो सरहद अजम से मिली हुई है वहां शहर आबाद हों ताकि अचानक हमले से बचा जा सके। इन शहरों का बनना इस तरह होता जो अरबों को मुवाफ़िक़ होता। इन शहरों के एक तरफ़ अरब की सरज़मीन होती जो चरागाह का काम देती और दूसरी तरफ़ अजमी सरज़मीन के सरसब्ज़ इलाक़े होते जहां से फल अनाज और दूसरी वस्तुए उपलब्ध होतीं अर्थात खेती बाड़ी दूसरी तरफ़ की जाती थी। शहरों की आबादकारी में यह भी समक्ष रखा गया कि उनके मध्य कोई दरिया या समुंद्र रोक न हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बस्रा, कूफ़ा, फ़ुसताद इत्यादि शहर आबाद फ़रमाए।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज़बूत और सही बुनियादों पर इन शहरों की आबादकारी की। उनकी सड़कों और रास्तों को वसीअ रखा। बड़ी खुली सड़कें थीं और निहायत बेहतरीन अंदाज़ में मुनज़्ज़म किया और यह सोच का ढंग साबित करता है कि आप इस इलम में माहिर और मुनफ़रद थे।

(सीरत अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब लेखक सालबी पृष्ठ 217,221 दारुल मअरफत बैरूत 2007 ई)

इसी तरह फ़ौज का विभाग है। इस का क़ियाम आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाक़ायदा फ़ौज की तर्तीब की और तंज़ीम साज़ी की। पद की दृष्टि से फ़ौज के रजिस्टर बनवाए और उनके वेतन निर्धारित फ़रमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम किया। एक जो बाक़ायदा जंग में शामिल होते और दूसरे वालेंटियरस जो ज़रूरत के वक़्त बुलाए जाते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़ौज की तर्बीयत का बहुत ख़्याल था। उन्होंने निहायत ताकीदी आदेश जारी किए थे कि विजय देशों में कोई व्यक्ति खेती बाड़ी या व्यापर का कार्य न करने पाए। जो इलाक़े फ़तह होंगे वहां जा के कोई व्यक्ति व्यापर या खेती बाड़ी नहीं करेगा क्योंकि ये फ़ौजी थे तो यह फ़ौजीयों के बारे में था क्योंकि इस से उनकी सैनिक प्रतिभा को नुक़्सान पहुंचने का अंदेशा था। आजकल हम मुस्लमान मुल्कों में भी देखते हैं कि फ़ौजी व्यापरों में व्यस्त हैं बल्कि एक मुल्क के बारे में कहा जाता है कि पहले तो फ़ौजी अपनी पेशावाराना प्रतिभा की तरफ़ देखते थे लेकिन अब कमीशन मिलते ही जो अफ़्सर होता है वह यह देखता है कि कहाँ कोई नई कॉलोनी बन रही है। कौन सी डीफ़ैंस कॉलोनी बन रही है जहां मुझे प्लाट मिले और मैं प्लाट अलाट कराऊँ और इसी वजह से बहरहाल फिर उनकी सिपाहियाना सलाहियतें कम होती चली जा रही हैं।

फिर आता है कि ठंडे और गर्म देशों पर हमला करते वक़्त मौसम का भी ख़्याल रखा जाता था ताकि फ़ौज की सेहत और तंदरुस्ती को नुक़्सान न पहुंचे। फ़ौज के सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सख़्ती से यह हिदायात दी थीं कि सारी फ़ौज तैराकी, घोड़ सवारी, तीर चलाना और नंगे-पाँव चलना सीखे। हर चार महीने के बाद सिपाहियों को वतन जा कर अपने परिजनों से मिलने के लिए छुट्टी दी जाती थी। मेहनत करने के ख़्याल से यह हुक्म था कि फ़ौज वाले रिकाब के सहारे से सवार न हों। घोड़े पर सवार होने के लिए रिकाब में पांव डाल के नहीं सवार होना बल्कि छलांग मार के सवार होना है। नरम कपड़े नहीं पहनें। धूप से बचें और हमामों में न नहाईं। वहां ज़्यादा आराम तलबी की आदत पड़ जाती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो सावन के मौसम में फ़ौज को हरे भरे क्षेत्रों में भेज देते थे। फ़ौजी बैरिकस और छावनियों के बनाते वक़्त जलवायु को समक्ष रखा जाता। यह भी ज़रूरी था कि हरे भरे क्षेत्रों में फ़ौजों को भेजा जाए ताकि वहां ताज़ा फ़िज़ा से उनकी सेहत भी अच्छी रहे। जलवायु को समक्ष रखा जाता था। समस्त राज्यों में फ़ौजी छावनियां बनवाईं। फ़ौजी ठंडे क्षेत्रों में मदीना, कूफ़ा, बस्रा, मूसिल, फ़ुसतात, दमिशक़, हम्स, उर्दन, फ़लस्तीन शामिल किए जहां हमेशा फ़ौज तयनात रहती थी। हर चार माह के बाद फ़ौजीयों को छुट्टी दी जाती थी। फ़ौजी मर्कज़ में एक समय में चार हज़ार घोड़े होते थे जिनकी देख-भाल की जाती। घोड़ों की रानों पर جَيْشٌ فِيْ سَبِيْلِ الله दाग़ कर लिखा जाता था अर्थात अल्लाह की राह में लश्कर। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में इस्लामी फ़ौज ने जंग के हथियारों में तरक़्क़ी की। नए साज़ो सामान तैयार किए जिनमें किलों के तोड़ने वाले हथियार مَنْجَنِيْق और دَبَّابَ हो इत्यादि शामिल थे। دَبَّابَ से मुराद वह हथियार है जिसके माध्यम से से दुश्मन के क़िलों को तोड़ा और मुनहदिम किया जाता है। इस के अंदर आदमी बैठते और क़िला की दीवारों में सुराख़ कर के इस की दीवारें गिराई जातीं।

(उद्धरित फ़ारूक़ शिबली नुमानी, पृष्ठ 216 से 218 इदारा इस्लामीयात कराची 2004 ई.) (सैरुस्सहाबा भाग 1 पृष्ठ 126,127 लेखक मुऊनिद्दीन नदबी दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

इस्लामी हुकूमत के अधीन ग़ैर कौमों के लोग बड़े-बड़े आला ओहदों पर फ़ायज़ रहे। यह नहीं कि केवल मुस्लमानों को आला ओहदे दिए जाते थे बल्कि ग़ैर मुस्लिमों को भी और ग़ैर क़ौमों के लोगों को भी आला ओहदे दिए जाते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिलाफ़त के ज़माने में भी हालाँकि अभी मुल्क में शांति के साथ सारी कौमें नहीं बसी थीं उन हुक़ूक़ को स्वीकार किया जाता था। इस लिए अल्लामा शिबली उस का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जंग के विभाग की जो बढ़ोतरी की थी उस के लिए किसी क़ौम और किसी मुल्क की बाँट नहीं थी यहां तक कि धर्म की भी कुछ क़ैद नहीं थी। वालेंटियरस फ़ौज में तो हज़ारों मजूसी शामिल थे अर्थात ऐसे लोग जो ख़ुदा को नहीं मानते, आग को पूजने वाले थे, सूरज को पूजने वाले थे वे भी शामिल थे जिनको मुस्लमानों के बराबर वेतन मिलते थे। फ़ौजी निज़ाम में भी मजूसियों का पता मिलता है।

इसी तरह लिखते हैं कि यूनानी और रूमी बहादुर भी फ़ौज में शामिल थे। इस लिए फ़तह मिस्र में उनमें से पाँच सौ आदमी शरीक-ए-जंग थे और आज पाकिस्तान में यह कहते हैं कि जी अहमदियों को फ़ौज से निकालो। यह बड़ी नाज़ुक, sensitive पोस्टें हैं। हालाँकि यदि तारीख़ पढ़ें तो पाकिस्तान की ख़ातिर सबसे ज़्यादा क़ुर्बानियां अहमदी अफ़िसरों ने दी हैं। बहरहाल यह तो उनके अपने कर्म हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में आता है कि जब अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ुसतात आबाद किया तो ये अलग मुहल्ले में आबाद किए गए। यहूदियों से भी यह सिलसिला ख़ाली नहीं था। इस लिए मिस्र की फ़तह में उनमें से एक हज़ार आदमी इस्लामी फ़ौज में शरीक थे। इसी तरह तारीख़ से साबित है कि ग़ैर अक़्वाम के लोगों को जंगी अफ़्सर भी निर्धारित किया जाता था। इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में ईरानियों को भी फ़ौजी अफ़्सर निर्धारित किया गया।

उनमें से कुछ के नाम भी तारीख़ में मौजूद हैं। अल्लामा शिबली ने छ: अफ़सरों के नाम ये लिखे हैं। स्याह, ख़ुसरो, शहरयार, शेरविया, शेरविया,अफ्रोदीन। इन अफ़िसरों को वेतन भी सरकारी खज़ाने से मिलती थीं और बाक़ायदा पेरोल (payroll) में उनका नाम था। चारों खिलाफ़त के बाद हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हो के सम्बन्ध में तारीख़ से साबित है कि उनके ज़माने में एक ईसाई इब्ने आसाल नामी वज़ीर-ए-ख़ज़ाना था। यह वज़ाहत में लिखते हैं कि तफ़सीर-ए-कबीर में जो मैंने पढ़ा है तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लामा शिबली के हवाले से अफ्रोदीन में लिखा हैं और ऐसे ही अल्फ़ारूक़ में भी दर्ज है लेकिन अरबी कुतुब में इस का नाम अफ्रोजैन लिखा है। अर्थात बजाय दाल के ज़ाल के साथ।(उद्धरित तफसीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 534,)( तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 504 दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1987 ई)बहरहाल यह नाम का ज़ाल और दाल का ज़रा सा अंतर है क्योंकि लोग इस पर बेहस शुरू कर देते हैं इसलिए वज़ाहत कर दी है।

इसी तरह मार्कीट कंट्रोल, प्राइस कंट्रोल के लिहाज़ से जो नाजायज़ हद तक क़ीमत गिराना है इस से भी इस्लाम ने मना फ़रमाया है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसकी पाबंदी करवाई। माल की क़ीमत गिराने की मनाही के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस्लाम ने क़ीमत को नाजायज़ हद तक गिराने से भी मना किया है क़ीमत का गिराना भी नाजायज़ माल कमाने का माध्यम होता है क्योंकि ताक़तवर व्यापारी इस माध्यम से से कमज़ोर व्यापारियों को थोड़ी क़ीमत पर माल बेचने पर मजबूर कर देता है और उनका दीवाला निकलवाने में सफ़ल हो जाता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना का एक वाक़िया है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो बाज़ार का दौरा कर रहे थे कि बाहर से आए हुए एक व्यक्ति को देखा कि वह ख़ुशक अंगूर निहायत सस्ती क़ीमत पर बेच रहा था जिस क़ीमत पर मदीना के व्यापारी बेच नहीं कर सकते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे हुक्म दिया कि या तो अपना माल मंडी से उठा कर ले जाए या फिर उसी क़ीमत पर बेचे जिस उचित क़ीमत पर मदीना के व्यापारी बेच रहे थे।" मदीना के जो व्यापारी थे वे माल की ज़्यादा क़ीमत नहीं ले रहे थे बल्कि उचित क़ीमत थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इसी क़ीमत पर बेचा करो। "जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो से इस हुक्म की वजह पूछी गई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि यदि इस तरह बेचने की उसे आज्ञा दी गई तो मदीना के व्यापारियों को जो उचित क़ीमत पर माल बेच रहे हैं नुक़्सान पहुँचेगा। इस में कोई शक नहीं कि कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस कार्य के रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ का यह कथन पेश किया कि मंडी के भाव में दख़ल नहीं देना चाहीए। परन्तु उनका यह आरोप दरुस्त नहीं था क्योंकि मंडी के भाव में दख़ल देने के यह अर्थ हैं कि पैदावार मांग (supply and demand) के उसूल में दख़ल दिया जाए।'' अर्थात स्पलाई और डीमांड के जो उसूल हैं उनमें दख़ल देना है'' और ऐसा करना बेशक नुक़्सानदेह है और इस से हुकूमत को बचना चाहीए।" मार्कीट ख़ुद अपने आप को स्पलाई डीमांड से एडजस्ट करती है'' अन्यथा लोगों को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा और व्यापारी तबाह हो जाऐंगे।''(इस्लाम का इक़तिसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 53) इस की आज्ञा नहीं दी जाए लेकिन क़ीमत कंट्रोल जो है वह जायज़ है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस की तफ़सील एक और जगह यूं वर्णन फ़रमाते हैं कि "शहरी हुक़ूक़ में यह भी दाख़िल है कि लेन-देन के मुआमलात में ख़राबी न हो। हम देखते हैं कि इस्लाम ने इस हक़ को भी नज़रअंदाज नहीं किया। इस लिए इस्लाम ने भाव को बढ़ाने और महंगा सौदा करने से रोका है। इसी तरह दूसरों को नुक़्सान पहुंचाने और उनको व्यापर में फ़ेल करने के लिए भाव को गिरा देने से भी मना फ़रमाया है। मुक़ाबले में कम क़ीमत करना भी मना है।'' एक दफ़ा मदीना में एक व्यक्ति ऐसे रेट पर अंगूर बेच रहा था जिस रेट पर दूसरे दुकानदार नहीं बेच सकते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो पास से गुज़रे तो उन्होंने उस व्यक्ति को डाँटा क्योंकि इस तरह बाक़ी दुकानदारों को नुक़्सान पहुंचता था। उद्देश्य इस्लाम ने सौदा महंगा करने से भी रोक दिया और भाव को गिरा देने से भी रोक दियाता कि न दुकानदारों को नुक़्सान हो और न पब्लिक को नुक़्सान हो।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 10 पृष्ठ 307)

तालीम के निज़ाम के बारे में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तालीम को निहायत तरक़्क़ी दी। समस्त देशों में मदरसे क़ायम किए जिनमें क़ुरआन-ए-मजीद, हदीस, फ़िक़्ह की तालीम दी जाती। बड़े उल्मा सहाबा को तालीम-ओ-तर्बीयत पर निर्धारित किया गया और पढ़ाने वालों के वेतन भी निर्धारित किए गए।

(उद्धरित फ़ारूक़ नुमानी से, पृष्ठ 233 संस्थान इस्लामीयात कराची 2004 ई.)

इसी तरह हिज्री कैलिंडर का आरंभ किस तरह हुआ? इस बारे में रवायात में आता है। एक तो सही बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि सहाबा ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आने से तारीख़ का शुमार नहीं किया और न आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात से बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना में आने से ही उन्होंने तारीख़ का शुमार किया।( सहीह बुख़ारी किताब मनाक़िब अल् अन्सार बाब अत्तारीख़ हदीस नम्बर 3934) अर्थात हिज्रत के वक़्त से।

बुख़ारी के शारह अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी कहते हैं इमाम सहेली के नज़दीक सहाबा ने हिज्रत से तारीख़ का आरम्भ करने का ख़्याल अल्लाह तआला के कथन لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ से लिया है। अत: مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ से मुराद वे दिन होगा जिस में नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा मदीना में दाख़िल हुए। वल्लाहो आलम।

हिज्री कैलिंडर की ज़रूरत क्यों महसूस हुई? इस बारे में अलग-अलग रवायात मिलती हैं। हज़रत अबू मूसा ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ लिखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से हमें पत्र आते हैं उन पर तारीख़ इत्यादि दर्ज नहीं होती। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों को सुझाव के लिए इकट्ठा किया। अल्लामा इब्ने हिज्र कहते हैं कि बुख़ारी ने किताबुल अदब में और हाकिम ने मैमून बिन महरान के वास्ते से रिवायत की है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में एक चैक पेश किया गया जिसकी मीयाद शाबान थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कौन सा शाबान? क्या वह जो गुज़र गया या वह जिसमें से हम गुज़र रहे हैं या वह शाबान जो आएगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया लोगों के लिए कोई तारीख़ निर्धारित करो जो सबको मालूम रहे।

इब्ने सीरियन कहते हैं कि एक व्यक्ति यमन से आया और उसने कहा मैंने यमन में एक चीज़ देखी जिसे वो तारीख़ कहते हैं। वह उसे इस प्रकार लिखते हैं कि अमुक वर्ष और अमुक महीना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया यह उम्दा तरीक़ है। तुम भी तारीख़ लिखों।

हिज्री तक़वीम का आरम्भ, इस कैलिंडर का आरम्भ किस ने किया? इस बारे में अलग अलग मत हैं। पहले कथन के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तारीख़ निर्धारित करने का इरशाद फ़रमाया और रबीउल अव्वल में तारीख़ लिखी गई। इस लिए हाकिम ने अपनी किताब اَلْاِكْلِيْل में इब्ने शहाब ज़ुहरी से रिवायत की है कि اَنَّ النَّبِيَّ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِيْنَةَ اَمَرَ بِالتَّارِيْخِ فَكُتِبَ فِي رَبِيْعٍ الْاَوَّلِ। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तारीख़ लिखने का इरशाद फ़रमाया। अत: वह रबीउल अव्वल में लिखी गई। अल्लामा इब्ने हिज्र कहते हैं कि यह रिवायत मौज़ल है। मौज़ल से मुराद वह रिवायत होती है जिसकी सनद में पै दर पै दो या ज़्यादा रावी साकित हों। एक और रिवायत में है कि तारीख़ का आरंभ उस दिन से हुआ जिस दिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हिज्रत फ़र्मा कर मदीना तशरीफ़ लाए और पसिद्ध बात उस के विपरीत है और वह यह कि तारीख़ तक़वीम हिज्री हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में क़ायम हुई।

سُبُلُ الْهُدٰى وَ الرَّشَاد فِيْ سِيْرَةِ خَيْرِ الْعِبَاد के लेखक कहते हैं कि मुहम्मद बिन यूसुफ सलाह कहते हैं कि इब्ने सालेह ने कहा है कि उन्होंने अबू ताहिर मरहमी की किताब अल् मशरूत में यह लिखा हुआ देखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तारीख़ लिखने का इरशाद फ़रमाया था क्योंकि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नजरान के ईसाइयों की तरफ़ पत्र लिखने का इरशाद फ़रमाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया इस में لِخَمْسٍ مِّنَ الْهِجْرَةِ अर्थात हिज्रत के बाद पांचवां वर्ष। अत: इस लिहाज़ से पहले इतिहासकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण किया है। दूसरे कथन के अनुसार हज़रत यअला बिन उमय्यह रज़ियल्लाहु अन्हो ने तारीख़ का आरंभ किया जो यमन के रहने वाले थे। इमाम अहमद ने इस को वर्णन किया है लेकिन इस में इन्क़िता है अर्थात अम्र और यअला के मध्य में। तीसरे और पसिद्ध कथन के अनुसार यह है कि तारीख़ तक़वीम हिज्री का आरम्भ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में हुआ।

हिज्री कैलिंडर के लिए हिज्रत से क्यों आरंभ किया गया? इस बारे में यह तफ़सील मिलती है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्ष को निर्धारित करने के लिए सुझाव मांगा तो एक राय यह थी कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जन्म से इस का आरंभ किया जाए। दूसरी राय यह थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि

व सल्लम के आने के वर्ष से इसका आरंभ किया जाए। तीसरी राय यह थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के साल से इसका आरंभ किया जाए। चौथी राय यह थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिज्रत के वर्ष से इसका आरंभ किया जाए। हिज्रत के वर्ष से इसका आरंभ करना उचित समझा गया क्योंकि जन्म और अवतरण के वर्ष की निर्धारित करने में मतभेद था। जहां तक वफ़ात का सम्बन्ध है तो इसलिए निर्धारित नहीं किया क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की वजह से मुस्लमानों के दु:ख दर्द का अंश इस में शामिल था। अत: सहाबा ने हिज्रत पर इत्तिफ़ाक़ किया।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने रबीउल अव्वल के बजाय मुहर्रम से वर्ष का आरंभ क्यों किया? तो इस की वजह यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिज्रत का इरादा मुहर्रम के महीना में ही कर लिया था। जुल हज्जा में बैअत-ए-उक़बा सानिया हो चुकी थी और वही हिज्रत का पेश-खीमा था। इस तरह बैअत-ए-उक़बा सानिया और हिज्रत का पुख़्ता इरादा कर लेने के बाद जिस महीने का चांद निकला हुआ वह मुहर्रम का चांद था। इस लिए उचित यही समझा गया कि इसी को नुक़्ता आरंभ बनाया जाए। अल्लामा इब्ने हिज्र कहते हैं इस्लामी कैलिंडर के मुहर्रम से आरंभ की मुनासबत से मेरे नज़दीक यह सबसे मज़बूत दलील है।(फत्हुल बारी ले इब्ने हजर भाग 7 पृष्ठ 314-315 किताब मनाक़िब अन्सार हदीस 3934 दारुल रियान लित्तुरास काहिरा 1986 ई)(सुबुल हुदा वल रिशाद भाग 12 पृष्ठ 36-37 बाब मब्दा तारीख़ इस्लामी दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1993 ई)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना कब तशरीफ़ लाए? इस बारे में अलग-अलग मत हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अलग अलग जगह ठहरते हुए बारह रबीउल अव्वल 14 नब्वी के अनुसार 20 सितंबर 622 ई. को मदीना के पास पहुंचे। कुछ इतिहासकारों के नज़दीक 8 रबीउल अव्वल की तारीख़ थी। कुछ के नज़दीक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सिफ़र के महीने में निकले और रबीउल अव्वल में पहुंचे। यक्म रबीउल अव्वल को मक्का से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिज्रत का आरंभ फ़रमाया और बारह रबीउल अव्वल को मदीना पहुंचे। ( उद्धरित सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन पृष्ठ 243 लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए)( शरह अज़ज़रक़ानी अला मवाहेबुल लदुनिया भाग 2 पृष्ठ 102, बाब हिजरत मुस्तफा वा अस्हाबुहो, दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1996 ई))

हिज्री की तकसीम किस वर्ष में हुई? इस बारे में भी अलग-अलग आरा हैं। कब यह कैलिंडर शुरू हुआ? कुछ कहते हैं सोला हिज्री में हुई। कुछ के नज़दीक सतरह हिज्री में हुई। कुछ कहते हैं कि अठारह हिज्री में हुआ। कुछ के नज़दीक इक्कीस हिज्री में हुई।

(फत्हुल बारी ले इब्ने हजर भाग 7 पृष्ठ 314-315 किताब मनाक़िब अन्सार हदीस 3934 दारुल रियान लित्तुरास काहिरा 1986 ई)(अल्क़ामिल फित्तारीख़ ले इब्ने असीर भाग 1 पृष्ठ 13 दारुल कुतुब अल्अरबी बैरूत 2012 ई)( अल्फारूक़ लेखक शिब्ली नो मानी पृष्ठ 248 इदारा इस्लामियात कराची 2004 ई)

लेकिन इस बात पर बहरहाल अक्सर सहमत हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में इस कैलिंडर का आरंभ हुआ।

इस्लामी सिक्का। आम इतिहासकारों के नज़दीक अरब में सबसे पहले सिक्का अब्दुल मालिक बिन मरवान ने जारी किया। मदीना तय्यबा के कुछ इतिहासकारों ने कहा है कि सबसे पहले इस्लामी सिक्के हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में प्रचलित हुए थे। उनके ऊपर 'الحمد لله ' कुंदा था और कुछ पर 'محمّدٌ رّسول الله' और कुछ पर ' لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ' वह भी कुंदा होता था लेकिन सासानी, ईरानी बादशाहों की तस्वीरों से कोई आपत्ति नहीं की गई। एक तहक़ीक़ के अनुसार सबसे पहले इस्लामी सिक्के दमिशक़ में सतरह हिज्री में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त के समय में प्रचलित हुए थे परन्तु उनके ऊपर भी कुछ नितीनी शहनशाह की तस्वीर और लातीनी में उनकी लिखाई मौजूद हुआ करती थी और एक रिवायत के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में अट्ठाईस हिज्री में सबसे पहले अपना सिक्का प्रयोग हुआ। वक़्ती तौर पर सासानियों के क्षेत्रों में प्रचलित सिक्कों को ही चलाया गया। उनके ऊपर सासानी बादशाहों की तसावीर हुआ करती थीं परन्तु उन पर कूफ़ी भाषा में बिस्मिल्लाह लिख दिया गया।

(उद्धरित अल्फारूक़ लेखक शिब्ली नुअमानी पृष्ठ 250 इदारा इस्लामिया कराची 1991 ई)(उद्धरित जुस्तजूए मदीना पृष्ठ 310 अब्दुल हमीद क़ादरी ओरियन्टल पब्लीकेशन्ज़ पाकिस्तान )

फिर यह कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कौन कौन सी बातें शुरू कीं? कौन सी अव्व्लियात हैं जो अव्व्लियात-ए-फ़ारूक़ी कहलाती हैं? अल्लामा शिबली नुमानी अपनी किताब अल् फ़ारूक़ में लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हर माध्यम से में जो जो नई बातें ईजाद कीं उनको इतिहासकारों ने एक स्थान पर लिखा है और उनको अव्व्लियात कहा जाता है और वह निमंलिखित हैं। अर्थात ये शुरू करवाईं :

बैतुल माल अर्थात ख़ज़ाना आरम्भ किया। नंबर दो अदालतें क़ायम कीं और क़ाज़ी निर्धारित किए। फिर तारीख़ और सन् क़ायम किया जो आज तक जारी है। नंबर चार अमीरुल मौमिनीन का उपनाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़-ए-वक़्त के लिए इख़तियार किया। नंबर पाँच फ़ौजी दफ़्तर तर्तीब दिया। नंबर छ: वालेंटियरसज़ का वेतन निर्धारित किया। नंबर सात दफ़्तर माल क़ायम किया। नंबर आठ पैमाइश जारी कीं। नंबर नौ मर्दुम-शुमारी करवाई। नंबर दस नहरें खुदवाई। ग्यारह शहर आबाद कराए अर्थात कूफ़ा, बस्रा, जीज़ा, फ़ुसतात, मूसल इत्यादि। नंबर बारह यह है कि मक़बूज़ा देशों को राज्यों में बांटा। नंबर तेराह उशूर अर्थात दसवाँ हिस्सा बतौर टैक्स या महसूल निर्धारित किया। उशूर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ईजाद है जिसकी इबतिदा इस प्रकार हुई कि मुस्लमान जो ग़ैर मुल्कों में व्यापर के लिए जाते थे उनसे वहां के दस्तूर के अनुसार माल व्यापर पर दस फ़ीसद टैक्स लिया जाता था। अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस वाक़िया की सूचना दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि इन मुल्कों के व्यापारी जो हमारे मुल्क में आएं उनसे भी इसी क़दर महसूल लिया जाए अर्थात फिर दस फ़ीसद उनसे भी वसूल किया जाए। नंबर चौदह यह है कि दरिया की पैदावार पर महसूल लगाया और महसूल निर्धारित किए। नंबर पंद्रह हर्बी व्यापारियों को देश में आने और व्यापर करने की आज्ञा दी। नंबर सोला जेलें बनाई गई। नंबर सतरह दुर्रे का प्रयोग किया। नंबर अठारह रातों को गशत कर के प्रजा के हाल पूछने का तरीक़ निकाला। नंबर उन्नीस पुलिस का विभाग क़ायम किया। नंबर बीस जगह जगह फ़ौजी छावनियां क़ायम कीं। नंबर इक्कीस : घोड़ों की नसलों में असील और मुजन्नस की तमीज़ क़ायम की जो उस वक़्त तक अरब में नहीं थी। नंबर बाईस परीक्षा लेने वाले निर्धारित किए। नंबर तेईस मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा तक यात्रियों के आराम के लिए मकानात बनवाए। चौबीस लावारिस बच्चों की परवरिश के लिए रुज़ीना निर्धारित किए। पच्चीस अलग-अलग शहरों में मेहमान ख़ाने तामीर कराए। छब्बीस यह क़ायदा क़रार दिया कि अहल-ए-अरब जबकि काफ़िर हों ग़ुलाम नहीं बनाए जा सकते। सत्ताईस बुरी अवस्था गरीबी में रहने वाले ईसाइयों और यहूदियों के रोज़ीने निर्धारित किए। अट्ठाईस दफ़्तर क़ायम किए। उनत्तीस : मुअल्लिमों और अध्यापकों के वेतन निर्धारित फ़रमाए, वेतन निर्धारित किए। तीस हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इसरार के साथ क़ुरआन-ए-मजीद की तर्तीब पर आमादा किया और अपने स्समने इस काम को पूरा किया इकत्तीस: क़ियास का उसूल क़ायम किया। बत्तीस फ़रायज़ में "अव्वल" का मसला ईजाद किया अर्थात खाने पीने के लिए कुछ लोगों को अयाल में शामिल करना। तेंतीस नमाज़ तरावीह जमात से क़ायम की। चौंतीस तीन तलाक़ों को जो एक साथ दी जाती थीं तलाक़ बायन क़रार दिया। यह तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सज़ा के तौर पर भी किया था। पैंतीस शराब की हद के लिए अस्सी कोड़े निर्धारित किए। छत्तीस व्यापर के घोड़ों पर ज़कात निर्धारित की। सैंतीस बनू सालब के ईसाइयों पर बजाय जिज़या के ज़कात निर्धारित की। अठत्तीस वक़्फ़ का तरीक़ा ईजाद किया। उनतालिस नमाज़ जनाज़ा में चार तक्बीरों पर समस्त लोगों का इजमा करवा दिया। वैसे उमूमी तौर पर मस्नून यही है तीन तक्बीरें होती हैं या पहली तकबीर के साथ आख़िरी तकबीर तक सलाम फेरने से पहले चार .... अभी भी यही प्रचलित हैं। चालीस यह है कि मसाजिद में उपदेश देने कातरीका क़ायम किया और उनकी आज्ञा से तमीमदारी ने वाज़ कहा और यह इस्लाम में पहला वाज़ था। इकतालीस इमामों और मुअज़्ज़नों के वेतन निर्धारित किए। बयालिस मस्जिदों में रातों को रोशनी का इंतिज़ाम किया। तैंतालीस हुजू करने पर ताज़ीर का दंड क़ायम किया। चवालीस गज़लों की कविताओं में महिलाओं के नाम लेने से मना किया हालाँकि यह तरीक़ा अरब में मुद्दतों से जारी था। अल्लामा शिबली लिखते हैं कि इस के सिवा और भी उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के अव्व्लियात हैं जिनको हम लम्बा होने के बे से नहीं लिखते हैं।

(उद्धरित अल्फारूक़ लेखक शिब्ली नुअमानी पृष्ठ 401 से 403 दारुल इशाअत कराची 1991 ई)

बहरहाल यह वर्णन अभी चल रहा है। आइन्दा भी इन शा अल्लाह वर्णन होगा। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ और इन शा अल्लाह नमाज़ के बाद नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

पहला वर्णन आदरणीय सरिपतो हादी सिसवोयू (suripto hadi sis-

woyo) साहिब इंडोनेशिया का है। उनासी वर्ष की आयु में पिछले महीने इनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उन्होंने इक्कीस वर्ष की आयु में बैअत कर ली थी और इस वक़्त तक बड़ी मज़बूती से क़ायम रहे। मरहूम की पत्नी ने लिखा है कि मरहूम ने पत्नी के अतिरिक्त आठ बच्चे यादगार छोड़े हैं। एक बेटा उनका बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमत बजा ला रहा है। मरहूम कई मर्तबा जमाअत के सदर की हैसियत से ख़िदमत सरअंजाम देते रहे। दारुल कज़ा इंडोनेशिया में बतौर क़ाज़ी भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। एक सक्रिय दाई इलल्लाह थे। किसी भी किस्म के मुश्किल हालात में तब्लीग़ का जज़बा कभी ख़त्म नहीं हुआ। उनके बेटे अरवान हबीबुल्लाह, जो मुरब्बी हैं, कहते हैं कि कई दफ़ा ऐसा होता कि मोटर साईकल किसी के घर छोड़ कर तब्लीग़ के लिए बीसियों किलो मीटर तक पैदल सफ़र किया करते थे। दूसरे गांव जाने के लिए नहरों और चटानों को पार करना पड़ता तो करते। सफ़र बहुत मुश्किल होता था। पिता साहिब मेहनत और मशक़्क़त करने वाले व्यक्ति थे। जब पिता साहिब बतौर टीचर नौकरी करते थे तो उन्होंने स्कूल के प्रिंसिपल से दरख़ास्त की कि उनके पढ़ाने की बारी चार ही दिनों में करवा दी जाए। स्कूल की जितनी क्लासें हैं चार दिन में मुकम्मल कर दें और बाक़ी दिन छुट्टी हो जाए ताकि तब्लीग़ के लिए ज़्यादा वक़्त मिल सके। गुरुवार में स्कूल से फ़ारिग़ हो कर सीधा तब्लीग़ के लिए जाते और इतवार की शाम को ही घर वापस आते थे बल्कि कई दफ़ा सोमवार की सुबह घर आते।

बशारत अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि वसती जावाके वोनू सोबू (wonosobo) इलाक़े में दस जमातें आपके माध्यम से क़ायम हुईं। हर हालत में तहज्जुद का ख़ास एहतिमाम करते थे। हर सतह के लोगों से बड़ी इज़्ज़त और नरमी से पेश आते थे। एक-बार आपने कहा कि मेरी इच्छा है कि आख़िरी दिनों तक तब्लीग़ में व्यस्त रहूं इसी में मेरी ख़ुशी और मेरी सेहत की कुंजी थी। अहमद हिदायत साहिब मुरब्बी सिलसिला वर्णन करते हैं कि मरहूम एक बहादुर दाई इलल्लाह थे। जब मुख़ालिफ़त करने वाले लोगों की तरफ़ से धमकी मिलती तो कभी ख़ौफ़ महसूस नहीं करते थे और बड़ा डट कर मुक़ाबला किया करते थे। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए।

अगला वर्णन चौधरी बशीर अहमद भट्टी साहिब पुत्र दाद साहिब भोड़ ज़िला ननकाना साहिब का है। पचानवे वर्ष की आयु में उनकी पिछले महीने वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके बेटे मुहम्मद अफ़ज़ल भट्टी साहिब मुरब्बी सिलसिला तनज़ानिया हैं। वह कहते हैं कि पैदाइशी अहमदी थे। नमाज़ रोज़े के पाबंद थे। इंसाफ़ पसंद और सच्ची बात करते थे। अहमदियत और ख़िलाफ़त के साथ अत्यधिक इशक़ था, छोटी आयु से ही क़ादियान जलसा पर जाया करते थे। गांव में तावीज़ गंडा करने वालों से लोग बहुत डरते थे, यह आम रिवाज है हमारे मुल्कों में। तो आप उन लोगों को कहा करते थे कि इन लोगों से न डरा करो। ये लोग अल्लाह तआला की मर्ज़ी के बग़ैर आपको कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते लेकिन गांव के लोग उनको यह कह दिया करते थे कि आप लोग तो अहमदी हैं, आप इन चीज़ों को नहीं मानते इसलिए आपको कोई नुक़्सान नहीं पहुंचता लेकिन हमें बड़ा डर है। 1953 ई. में जब फ़सादाद शुरू हुए तो मुख़ालिफ़ीन अहमदियत ने इलाक़े में जलूस निकाले। अहमदियों के घरों को आग लगाने का प्रोग्राम बनाया। क़रीबी गांव से आपकी बिरादरी के बड़े लोग जो अपने गांव में बड़ा असर-ओ-रसूख़ रखते थे परन्तु अहमदी नहीं थे, कुछ लोग उनके पास गए और उन्होंने कहा कि अहमदी डेरे पर रहते हैं, कल हमारा वहां आग लगाने का प्रोग्राम है उनको समझा लें कि वहां से चले जाएं या अहमदियत से इंकार कर दें अन्यथा परिणाम अच्छा नहीं होगा। तो उनके रिश्तेदारों ने जब अपने रिश्तेदार को समझाया कि आरिज़ी तौर पर अहमदियत का इंकार कर दो। जब जलूस चला जाएगा तो फिर वापस अपने दीन पर आ जाना तो आपने उन्हें कहा कि आप परेशान ना हों हमने काफी सोच समझ कर अहमदियत क़बूल की है। हमारा कोई नुक़्सान नहीं होता। हम अहमदियत के लिए क़ुर्बान तो हो सकते हैं परन्तु यह गवारा नहीं कर सकते कि एक मिनट के लिए भी अपने ईमान से पीछे हटें। बहरहाल उन्होंने कहा यदि तुम कुछ नहीं कर सकते तो न करो हमारा तवक्कुल अल्लाह तआला पर है। लेकिन अल्लाह तआला ने ऐसा इंतिज़ाम किया कि जलूस भी कुछ फ़ासले तक आ कर ख़ुद बख़ुद तित्र बित्तर हो गया और उनको उनके डेरे तक आने का साहस नहीं हुआ।

पीछे रहने वालों में दो बेटियां और पाँच बेटे शामिल हैं। एक बेटे आदरणीय अफ़ज़ल भट्टी साहिब मुरब्बी सिलसिला तनज़ानिया हैं, वहां ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। मैदान-ए-अमल में होने की वजह से जनाज़ा और तदफ़ीन में शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनके बेटे जो शामिल नहीं हो सके उनको भी सब्र और हौसले की तौफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन हमीदुल्लाह ख़ादिम मुल्हमी साहिब इब्ने चौधरी अल्लाह रख्खा मिलही साहिब दारुल नसरगरबी रब्वाह का है। 82 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन ।आप चौधरी अल्लाह बख़्श भुल्र साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नवासे और नसरुल्लाह मिलही साहिब शहीद मुरब्बी सिलसिला के पिता थे। मरहूम नमाज़ रोज़े के पाबंद, सादा स्वभाव, शरीफ़ व्यक्तित्व, ग़रीबो का ख्याल रखने वाले, एक मुख़लिस और फ़िदाई अहमदी थे। दौरान-ए-मुलाज़मत बड़ी बहादुरी से मुख़ालिफ़त का डट कर मुक़ाबला करते रहे। उनके एक बेटे वाकिफ-ए-ज़िंदगी हैं। रब्वाह में ताहिर हार्ट में काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन मुहम्मद अली ख़ान साहब पिशावर का है जो शरीफ़ अल्लाह ख़ान साहब के बेटे थे। नवासी वर्ष की आयु में या 89 eighty nine वर्ष की आयु में देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से 1/8 हिस्सा के मूसी थे। पीछे रहने वालों में तीन बेटियां और सात बेटे शामिल हैं। उनकी एक बेटी सलीमा साहिबा जो बुरहान साहिब की पत्नी हैं यहां इस्लामाबाद में ही रहते हैं। यह लिखती हैं कि पहले ये लोग, उनका ख़ानदान ग़ैर मुबाइअ थे। फिर 1954 ई. में उनके पिता ने ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैअत की और ताहयात जमाअत और ख़िलाफ़त से जुड़े रहे और उनके पिता ने दीनी ग़ैरत और जमात से गहरी वाबस्तगी का प्रकटन किया। बहरहाल इस के बाद फिर उनको जमाती ख़िदमत की भी तौफ़ीक़ मिली। क़ायद ज़िला ख़ुद्दामुल अहमदिया भी रहे। फिर सैक्रेटरी वसाया, सैक्रेटरी तालीम उल-क़ुरआन इत्यादि रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब का मुतआला बड़ी गहराई से किया करते थे। क़ुरआन-ए-करीम से आपको बेपनाह मुहब्बत थी। हमेशा आपको क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते देखा। क़ुरआन-ए-करीम का बहुत सा हिस्सा आपको ज़बानी याद था। दुआ करने वाले, नेक, मेहमान नवाज़, सच्चे और अच्छे इन्सान थे। दुरूद शरीफ़ का बहुत जाप किया करते थे। लोगों की माली मदद भी बहुत करते थे। उनके ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों ने उनको कहा कि यदि आप अहमदियत छोड़ दें तो हम आपके क़दमों में क़ुर्बान होने के लिए तैयार हैं तो कहती हैं मेरे पिता ने उनको उत्तर दिया मुझे तुम्हारी क़ुर्बानी की क्या ज़रूरत है। मैं तो ख़ुद क़ुर्बान हो चुका हूँ। अब मेरी बात सुनो कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान लो जिस ने आना था वह आ गया, और अपनी ज़िंदगियां सँवार लो। लेकिन बहरहाल उन्होंने कोई तवज्जा नहीं दी। आहिस्ता-आहिस्ता वे सारे रिश्तेदार साथ छोड़ गए लेकिन आप अहमदियत के साथ ताल्लुक़ में दिन प्रतिदिन तरक़्क़ी करते चले गए । अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

अगला वर्णन साहिबज़ादा महदी लतीफ़ साहिब मेरीलैंड अमरीका का है सतासी 87 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन । साहिबज़ादा महदी लतीफ़ साहिब हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ शहीद रज़ियल्लाहु अन्हो के पोते और साहिबज़ादा मुहम्मद तय्यब लतीफ़ साहिब मरहूम के बेटे थे। साहिबज़ादा महदी लतीफ़ साहिब मरहूम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का बहुत गहरा अध्यन किया करते थे। पांचों नमाज़ों और तहज्जुद की अदायगी बाक़ायदगी से किया करते थे। ख़िलाफ़त अहमदियत के शैदाई थे। बहुत ही आजिज़ और विनम्र व्यक्ति थे। आपको तब्लीग़ का बहुत शौक़ था और हमेशा दूसरों को भी तब्लीग़ करने की तलक़ीन किया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलंद करे।

अगला वर्णन फ़ैज़ान अहमद समीर इब्ने शहज़ाद अकबर साहिब का है। शहज़ाद अकबर साहिब जो हैं यह हमारे दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी रब्वाह के कर्मचारी हैं, उनके बेटे थे। कोविड से सोला वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन । निहायत ही ज़हीन, कम बोलने वाले, शरीफ़ व्यक्तित्व, नेक बचा था। वक़्फ़-ए-नौ की तहरीक में शामिल था। अपनी पढ़ाई की तरफ़ तवज्जा देने वाला और ग़ैर ज़रूरी सरगर्मीयों में बल्कि खेलों में भी बहुत कम हिस्सा लेता था। बिल्कुल संजीदा स्वभाव का बच्चा था। स्कूल के अतिरिक्त ज़्यादा वक़्त घर पर गुज़ारता था। उनके नाना ख़्वाजा अब्दुल शकूर साहिब भी जमात की लंबा अरसा ख़िदमत करते रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूम के माता पिता को भी सब्र अता फ़रमाए। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

☆ ☆ ☆ ☆

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-24)

## करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

**8 जून 2015 ई. सोमवार के दिन**

**एक मेहमान ने प्रश्न किया कि अहमदी मुस्लमानों और दूसरे मुस्लमानों में क्या अंतर है।**

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अहमदी मुस्लमान इस बात पर विश्वास रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चौदह सौ वर्ष पूर्व मसीह और महदी के आने की जो भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि जब वह आए तो उसे स्वीकार करना और उसे मेरा सलाम पहुंचाना चाहिए तुम्हें बर्फ़ की सिलों पर से गुज़र कर जाना पड़े। इस लिए भविष्यवाणी के अनुसार वह मसीह व महदी अलैहिस्सलाम अवतरित हुए और हमने उनको स्वीकार किया।

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि हज़रत ईसा आसमान पर नहीं हैं। आसमान से किसी ने नहीं आना था बल्कि मुस्लमानों में से ही किसी व्यक्ति ने मसीह अलैहिस्सलाम की विशेषताओं के साथ खड़ा होना था। आप का मसील बन कर आना था। और जिस मसीह ने आना था उसने महदी भी होना था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस से साबित है कि मसीह और महदी एक ही व्यक्तित्व हैं। फिर क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह-ओ-महदी के आने की अलामात और निशानियां भी बताईं जिन में सूरज और चांद को ग्रहण लगने का भी निशान था और इसी तरह दूसरी बहुत सी निशानीयां थीं ये सब पूरी होती देखें तो हमने इस मसीह-ओ-महदी को मान लिया। जब कि दूसरे कहते हैं कि अभी मसीह नहीं आया उसने आसमान से नाज़िल होना है वह मसीह के आने के मुंतज़िर हैं। जबकि हम कहते हैं कि वह आ चुका है और उस के आने के साथ वह सारी निशानियां और अलामात पूरी हुईं जो उस के आने के साथ जुड़ी थीं और उस की सदाक़त के लिए बतौर प्रमाण थीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खातामुन नबिय्यीन हैं। क़ुरआन-ए-करीम आख़िरी किताब है । क़ुरआन-ए-करीम के बाद कोई नई शरीयत नहीं है। आने वाले मसीह और महदी ने क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों और क़ुरआन की शिक्षाओं को ही आगे चलाना है और क़ुरआन-ए-करीम की शरीयत पर ही अनुकरण करना है और करवाना है।

एक मेहमान ने कहा कि मैं जलसे में पहली बार शामिल हुआ हूँ। मुझे आशा नहीं थी कि इतने बड़े पैमाने पर प्रबन्ध होगा। सारे प्रबन्ध बहुत आला थे जब भी हमें किसी चीज़ की आवश्यकता पड़ी फ़ौरी प्रदान की गई। हम यहां तीन दिन रहे मैं आपके सिस्टम को देखकर हैरान रह गया हूँ। आपका सारा निज़ाम ही आश्चर्यचकित है।

एक मेहमान ने प्रश्न किया कि अहमदी मुस्लमानों और दूसरे मुस्लमानों में क्या अंतर है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अहमदी मुस्लमान इस बात पर विश्वास रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चौदह सौ वर्ष पूर्व मसीह और महदी के आने की जो भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि जब वह आए तो उसे स्वीकार करना और उसे मेरा सलाम पहुंचाना चाहिए तुम्हें बर्फ़ की सिलों पर से गुज़र कर जाना पड़े। इस लिए भविष्यवाणी के अनुसार वह मसीह व महदी अलैहिस्सलाम अवतरित हुए और हमने उनको स्वीकार किया।

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि हज़रत ईसा आसमान पर नहीं हैं। आसमान से किसी ने नहीं आना था बल्कि मुस्लमानों में से ही किसी व्यक्ति ने मसीह अलैहिस्सलाम की विशेषताओं के साथ खड़ा होना था। आप का मसील बन कर आना था। और जिस मसीह ने आना था उसने महदी भी होना था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस से साबित है कि मसीह और महदी एक ही व्यक्तित्व हैं। फिर क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह-ओ-महदी के आने की अलामात और निशानियां भी बताईं जिन में सूरज और चांद को ग्रहण लगने का भी निशान था और इसी तरह दूसरी बहुत सी निशानीयां थीं ये सब पूरी होती देखें तो हमने इस मसीह-ओ-महदी को मान लिया। जब कि दूसरे कहते हैं कि अभी मसीह नहीं आया उसने आसमान से नाज़िल होना है वह मसीह के आने के मुंतज़िर हैं। जबकि हम कहते हैं कि वह आ चुका है और उस के आने के साथ वह सारी निशानियां और अलामात पूरी हुईं जो उस के आने के साथ जुड़ी थीं और उस की सदाक़त के लिए बतौर प्रमाण थीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खातामुन नबिय्यीन हैं। क़ुरआन-ए-करीम आख़िरी किताब है । क़ुरआन-ए-करीम के बाद कोई नई शरीयत नहीं है। आने वाले मसीह और महदी ने क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों और क़ुरआन की शिक्षाओं को ही आगे चलाना है और क़ुरआन-ए-करीम की शरीयत पर ही अनुकरण करना है और करवाना है।

एक मेहमान ने कहा कि मैं जलसे में पहली बार शामिल हुआ हूँ। मुझे आशा नहीं थी कि इतने बड़े पैमाने पर प्रबन्ध होगा। सारे प्रबन्ध बहुत आला थे जब भी हमें किसी चीज़ की आवश्यकता पड़ी फ़ौरी प्रदान की गई। हम यहां तीन दिन रहे मैं आपके सिस्टम को देखकर हैरान रह गया हूँ। आपका सारा निज़ाम ही आश्चर्यचकित है।

इस के बाद उन्हों ने प्रश्न किया कि जमाअत की संख्या ज़्यादा कहाँ है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान में ज़्यादा है। इसी तरह अफ्रीक़ा के देशों में बड़ी संख्या है। घाना में लाखों अहमदी हैं। ख़ुदा तआला जिसको तौफ़ीक़ देता है वह स्वीकार करता है। हम प्रत्येक जगह संदेश पहुंचा रहे हैं। जिनको ख़ुदा तआला चाहता है हिदायत दे देता है और वह जमाअत में शामिल हो जाते हैं। हमारी दुआ है कि ख़ुदा तआला सब के दिल खोले और लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले मसीह और महदी को स्वीकार करें।

**एक मेहमान ने प्रश्न किया कि मुस्लमान देशों में जमाअत का सैंटर, कोई केंद्र क्योंनहीं है?**

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महदी के आने की ख़बर दी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह नहीं फ़रमाया कि वह अरबों में से होगा। जब आपने وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ की आयत पढ़ी तो एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि ये कौन लोग हैं जो दर्जा तो सहाबा का रखते हैं परन्तु अभी उन में शामिल नहीं हुए। तो इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो के कंधे पर अपना हाथ रखा और फ़रमाया यदि ईमान सुरय्या (सितार का नाम) के पास भी पहुंच गया अर्थात ज़मीन से उठ गया तो उन लोगों में से कुछ लोग इस को वापस ले आयेंगे। तो हज़रत सलमान फ़ारसी ग़ैर अरब थे। इस में यह भविष्यवाणी भी थी कि आने वाला मसीह-ओ-महदी अरबों में से नहीं होगा।

अल्लाह तआला ने अरबों को जो ख़िलाफ़त की नेअमत अता की थी, उनके आमाल के कारण से यह नेअमत उनसे छिन गई। अरबों ने इस नेअमत को ज़ाए कर दिया। इस लिए ख़ुदा तआला ने बाहर की क़ौम से आने वाले महदी को भेजा यही कारण है कि मुस्लमान देश इस आने वाले महदी को स्वीकार नहीं करते और हम अहमदियों को ग़लत कहते हैं। हमसे इस विषय में बेहस नहीं करते, बात नहीं करते बल्कि अपने उलमा के हाथ में खिलौना बने हुए हैं। उनके मौलवियों ने क़ुरआन-ए-करीम की आयात और इमाम महदी के आने के बारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्शादात की जो तशरीह की हुई है उसी पर चलते हैं।

पाकिस्तान और फिर इंडोनेशिया, यह मुस्लमान देश हैं यहां लाखों में अहमदियों की संख्या है। इंडोनेशिया में एक बड़ी संख्या है। हमारा काम तब्लीग़ करना है। इलाही जमाअतें संदेश पहुंचाती रहती हैं और बढ़ती रहती हैं। हमारा एक अरबी चैनल M.T.A 3 है। सारे प्रोग्राम अरबी भाषा में प्रसारित होते हैं। प्रत्येक वर्ष अरब देशों से लोग जमाअत में शामिल हो रहे हैं।

**एक मित्र ने प्रश्न किया कि मैं अहमदी हूँ। पहली दफ़ा आया हूँ। मेसीडोनिया में काफ़ी समस्याएँ हैं। दुआ करें कि मेसीडोनिया में अहमदियत ज़्यादा फैले।**

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम तब्लीग़ भी करते हैं और दुआ भी करते हैं और बाक़ी जहां-जहां पाबंदीयां हैं वहां प्रयास भी करते हैं। ख़ुदा तआला ने اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की दुआ सिखलाई है। तो ख़ुदा तआला से दुआ करनी चाहिए कि यदि सही रास्ता है तो ख़ुदा तआला रहनुमाई फ़रमाए और स्वीकार करने की

तौफ़ीक़ दे। मेसीडोनिया के अहमदी लोगों को दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा तआला हुकूमत को ये रोकें दूर करने की तौफ़ीक़ दे। कोई नबी ऐसा नहीं आया जिस की राह में रोकें नहीं डाली गई हों। रोकें तो होती हैं परन्तु दूर हो जाती हैं। आप दुआएं करें।

★ एक मेहमान ने कहा कि मेरा सियासत से सम्बन्ध है यदि समस्याओं हैं तो में गारंटी देता हूँ कि हम ये समस्याओं हल करेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:ईमानदारी का तक़ाज़ा है कि ईमानदारी के साथ अपने शहरियों के हुक़ूक़ अदा करने की प्रयास करें।ऐसा करेंगे तो ख़ुदा तआलाके फ़ज़लों के वारिस होंगे।

★ एक नौ-मुबाईन मित्र ने कहा कि मैंने कल ही बैअत की है और जमाअत अहमदिया में शामिल हुआ हूँ। हम अहमदी ग्रुप की हिमायत कौन करेगा। इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। हिमायत का हक़ ख़ुदा तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिया है। अहमदी, मुस्लमान हैं यदि हम नेक हैं इन बातों पर अनुकरण कर रहे हैं जो क़ुरआन-ए-करीम ने बताई, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो वर्णन फ़रमाया इस पर अनुकरण कर रहे हैं तो फिर नेक अनुकरण कर रहे हैं तो ये सब बातें और ये नेक-आमाल जन्नत का वारिस बनाते हैं।

बाक़ी हिमायत का हक़ केवल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को है और अल्लाह तआला के इच्छा से है। हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम की हैसियत से आया हूँ। मैंने जो सम्मान भी पाया है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में पाया है। सब कुछ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ही है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया न कोई मौलवी हिमायत कर सकता है न खवाजा न कोई सय्यद किसी की हिमायत कर सकता है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल बताया करते थे कि एक पीर सय्यद था। उसने एक महिला को कहा कि तुम गुनाह कर के आई हो, मैं सय्यद हूँ और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नसल में से हूँ मैं तुम्हारी शफ़ाअत करूँगा। यदि ख़ुदा ने तुम से प्रश्न किया तुम कहना कि मैं एक ऐसे पीर की मुरीदनी हूँ जो सय्यद है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कितनी तकलीफ़ें उठाई हैं। तो इस पर ख़ुदा तुमको जन्नत में दाख़िल कर देगा। जब मैं आऊंगा तो ख़ुदा को कहूँगा कि मैं सय्यद हूँ और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नसल से हूँ तो ख़ुदा मुझे भी जाने देगा। तो ये उनकी बातें हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ुदा तआला ने किसी पीर को, किसी खवाजा को, किसी सय्यद को, किसी मौलवी को शफ़ाअत का हक़ नहीं दिया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इन्सान को अपने आमाल की ओर ध्यान देना चाहिए। और नेक और सालिह आमाल बजा लाने चाहिऐं और अल्लाह तआला से उस का फ़ज़ल माँगना चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि सूरत अल्बक़रा आयत 256 में अल्लाह तआला ने यही वर्णन फ़रमाया है कि अल्लाह के इज़न के बिना किसी को भी शफ़ाअत का हक़ नहीं है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक बड़े मुख़लिस सहाबी के बेटे बड़े सख़्त बीमार हुए और लगभग मौत की कैफ़ीयत तारी हो गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी सेहत के लिए दुआ की कि ख़ुदा तआला इस को मौत के मुँह से वापस ले आए। परन्तु यह दुआ स्वीकार नहीं हुई। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि यदि दुआ स्वीकार नहीं होनी तो फिर मेरी शफ़ाअत स्वीकार फ़रमाए। इस पर अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम हुआ कि मेरे इज़न के बिना शफ़ाअत करने वाला कौन हो सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इतना शिद्दत से इल्हाम था कि मैं काँप गया और ख़ुदा के हुज़ूर बहुत इस्तिग़फ़ार किया। इस पर ख़ुदा की ओर से इल्हाम हुआ कि तुम्हें इज़न दिया जाता है। इस लिए ख़ुदा के इज़न से आपने शफ़ाअत की तो इस लड़के को सेहत हो गई और वह मौत के मुँह से वापस आया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कुछ मुआमलात में जब अल्लाह तआला आज्ञा देता है तो अपने दूसरे प्यारों को भी आज्ञा दे देता है तो वह शफ़ाअत कर सकते हैं परन्तु शर्त अल्लाह की आज्ञा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अत: शफ़ाअत का असल इज़न और आज्ञा ख़ुदा तआला ने केवल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दी है और किसी को नहीं दी कि उम्मत के लिए शफ़ाअत कर सके। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात ही है जो क़ियामत के दिन शफ़ाअत करेगी और कोई नहीं।

इस के बाद प्रश्न करने वाले मित्र ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अनवर की बातें मेरे सीने में उतर रही हैं। ऐसे लगता है कि मैं अभी रोने लग जाऊंगा इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लेक्चरर पढ़ें। आपने अतिरिक्त क़ुरआन-ए-करीम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्शादात, आपकी शिक्षाओं और आपसे इशक़ के अतिरिक्त कोई अधिक बात नहीं की और यही असल है। अल्लाह तआला उनको मज़ीद इख़लास और सम्बन्ध में बढ़ाए और अपने फ़ज़लों से नवाज़े।

एक अहमदी बच्ची सबीला साहिबा ने जलसा सालाना के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक नज़म तैयार की थी। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के इस अवसर पर उर्दू में सुन्दर आवाज़ में यह नज़म प्रस्तुत की। नज़म का पहला शेअर यह है ।

वह देखता है ग़ैरों से क्यों दिल लगाते हो ।
जो कुछ बुतों में पाते हो उस में वह क्या नहीं।।

मेसीडोनिया से आने वाले एक पति पत्नी Cikarski Jordan साहिब और Lidija साहिबा ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए बताया।

हम तीसरी मर्तबा जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए हैं। अब हम अपने आपको जमाअत का हिस्सा समझते हैं। जलसा के माहौल ने हमें प्रभावित किया है। यहां मुहब्बत और भाई चारे का माहौल है। हम बड़ी ख़ुशी के साथ अगले जलसा में शामिल होना चाहेंगे। जब हमने ख़लीफ़ा की तक़ारीर सुनी तो हम पर बहुत गहरा प्रभाव हुआ और विशेषता जिस तरीक़ से वह हमें समझाना चाह रहे थे वह बहुत अच्छा तरीक़ था।

एक मेहमान गौरान सितम बोलीसकी साहिब ने कहा :

जलसे का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। विशेषता जलसे के मेनहाल में जो प्रोग्राम हुए उसने हमें बहुत प्रभावित किया। सब इंतिज़ामात बहुत अच्छे तरीक़ से किए गए। जमाअत के लोग के रवैय्या से प्रकट होता था कि वह किस क़दर अपने ख़लीफ़ा से मुहब्बत करते हैं। उनसे प्यार करते हैं। इस मुहब्बत और इज़्ज़त ने हमें हैरान कर दिया और ये बातें हम अपने सब जानने वालों को मेसीडोनिया में जा कर बताएंगे।

मेसीडोनिया से आने वाले एक मेहमान कैरो दी मित्रो सकी साहिब ने कहा : मैं आपकी जमाअत से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं जीवन में पहली दफ़ा इतने अच्छे लोगों से मिला हूँ। मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित इस्लाम के संदेश ने किया है जो मुझे यहां से मिला। आपके पास दीवारों पर जो संदेश लिखा हुआ है (बैनर्ज़ इत्यादि) वह केवल शब्दों नहीं हैं बल्कि वास्तव में आप लोग इस पर अनुकरण करते हैं। आप मुहब्बत दिखाते हैं, अमन का मुज़ाहरा करते हैं। इन सब बातों ने हमारे दिल-ए-पर गहरा प्रभाव किया है।

मेसीडोनिया से आने वाले एक मेहमान एरिच नजात साहिब ने कहा :

मुझ पर जलसा का बहुत प्रभाव हुआ है। जलसा की तक़ारीर बहुत अच्छी थीं। जिनका ख़ुलासा अमन और दूसरे धर्म का हतराम, आपस में मुहब्बत और अमन का क़ियाम है। यह नज़र आता है कि जमाअत अहमदिया मुहब्बत और अमन समस्त लोगों के लिए दिखाती है। यह जमाअत किसी से नफ़रत नहीं करती। यह जमाअत समस्त लोगों को मुहब्बत की ओर लेकर जाती है और इस्लामी शिक्षा भी यह है कि सब का सत्कार किया जाए ।

मेसीडोनिया से आने वाली एक और मेहमान महिला Julija Coneuska साहिबा ने कहा :

हुज़ूर को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। जिस तरह ख़लीफ़ा ने हमारा स्वागत किया उसने मुझे बहुत हैरान कर दिया है। मैं हैरान हुई हूँ कि आपका ज्ञान कितना बड़े है। आपको ज्ञान पर दस्तरस प्राप्त है। आपका व्यक्तित्व बहुत पुर अमन व्यक्तित्व है। ख़लीफ़ा में यह रुहानी ताक़त है कि वह सब लोगों की ध्यान का केंद्र हैं। उनका प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देना और उत्तर देने के लिए तैयार रहना, और प्रश्न भी ऐसे कि डाक्टर भी उनके उत्तर मुश्किल से दे। ख़लीफ़ा ने प्रत्येक तरह से हमारा ख्याल रखा और हमें पूरा ध्यान दिया।

उन्हों ने कहा : मैं सोशल वर्कर के तौर पर काम करती हूँ। मैं यह कहना चाहूंगी कि इस जलसा ने समस्त दुनिया के मुस्लमानों को इकट्ठा कर दिया है। मैं धर्म से ईसाई हूँ परन्तु इस के अतिरिक्त इन दिनों बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ। इन दिनों बहुत ख़ुश हूँ। इस तरह के प्रोग्राम में पहली बार शामिल हुई हूँ। इस जलसा ने बहुत अच्छे असरात छोड़े हैं। मैं पहली बार इस तरह के अनुवभत से गुज़री हूँ कि सब का ख्याल रखा जा रहा है। मुझे ख़ुशी है कि मै यहां उपस्थित हूँ। मैं आपके बहुत अच्छे भविष्य की इच्छाओं रखती हूँ।

मेसीडोनिया से आने वाले एक मेहमान Toni Ajtouski (टोनी अजतस्की साहिब) ने कहा :

मैं एक लेखक हूँ। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि इस वर्ष जलसा पर आया हूँ। यह मेरे लिए एक नया अनुवभ है। बतौर लेखक मैं विभिन्न प्रोग्रामों में शामिल हुआ हूँ। परन्तु यह सबसे अच्छा प्रोग्राम था। बहुत ज़्यादा लोग इस में शामिल हुए, सब कुछ

शेष पृष्ठ 12 पर

# Virtual क्लास

## नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह कैनेडा की अपने प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन से वर्चूअल मुलाक़ात

**मीटिंग बहुत ईमान अफ़रोज़ थी, मैंने इस मुलाक़ात से अपने विभाग को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ सीखा (सैक्रेटरी माल)**

**मुलाक़ात से पहले मेरी हालत एक ऐसे खोए हुए बच्चे की तरह थी जिसे मालूम ही नहीं कि किधर जाना है, मुलाक़ात के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे प्यारे हुज़ूर ने मुझे रास्ता दिखा दिया (सैक्रेटरी तब्लीग़)**

**मैं अपने काम को बेहतर बनाने के लिए अपने अंदर एक नया जोश और जज़्बा महसूस कर रही हूँ (सैक्रेटरी ख़िदमत-ए-ख़लक़)**

प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की विनम्रता और आज्ञा से मज्लिस लजना इमाइल्लाह कैनेडा मार्च 2020 को यू.के की यात्रा करनी थी 29 मार्च 2020 को हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात थी, लेकिन कोविड की वजह से इस यात्रा को मुल्तवी करना पड़ा। हमारे दिल दुखी और तबीयतें उदास थीं। हम दुआओं में लग गए कि ख़ुदा तआला अपनी ओर से मुलाक़ात की कोई सूरत पैदा कर दे। अभी दुनिया को तो इस बिमारी से मुकम्मल तौर पर निजात नहीं मिली थी लेकिन हमारी ख़ुशक़िसमती कि हमें प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात की खुशखबरी ज़रूर मिल गई। ख़ुदा तआला ने हमारी दुआएं सुन लीं और हमारे प्यारे आक़ा ने हम आजिज़ ख़ादिमात की दिल की संतुष्टि के लिए ऑनलाइन मुलाक़ात की मंज़ूरी दे दी। अल्हमदु लिल्लाह। हमारी ख़ुशीयों का कोई ठिकाना न रहा। 16 अगस्त 2020 इतवार के दिन दोपहर डेढ़ बजे जामिआ अहमदिया ताहिर हाल में हमारी हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात थी। अल्हमदु लिल्लाह कल अट्ठाईस मेमब्रात में से सत्ताईस मेमब्रात उचित हिफ़ाज़ती तदाबीर के साथ निर्धारति समय पर पहुंच कर कमरे में अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ गईं। हमारी ख़ुशकिस्मती कि आमला की मैंबर्ज़ की सय्यदना हुज़ूर अनवर के साथ इस तारीख़ी मुलाक़ात में ख़ानदान-ए-हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चशम-ओ-चिराग़ आदरणीया श्रीमती साहबज़ादी बी-बी अम्तुल जमील बेगम साहिबा बेटी नेक अख़तर सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो भी हमारे साथ माननीय मैंबर की हैसियत से मौजूद थीं।

ठीक डेढ़ बजे स्क्रीन पर प्यारे आक़ा का मुस्कुराता हुआ नूरानी चेहरा प्रकट हुआ तो सब आमिला मैंबर्ज़ ने खड़े हो कर सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को सलाम किया। जिस पर हुज़ूर अक़्दस ने बड़े प्यार से उत्तर देते हुए सबको बैठ जाने को फ़रमाया और ख़ाकसार से मीटिंग के बारे में इस्तिफ़सार करने के बाद फ़रमाया कि चलें दुआ से मीटिंग शुरू करते हैं। दुआ के बाद ख़ाकसार के दाएं बाएं बैठी हुई मेमब्रात का परिचय हुआ तो सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर ने नायब सदर साहिबा और नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत नौ-मुबाइनात से अपनी बात चीत का आरंभ फ़रमाया और फिर अकेले अकेले समस्त सचिवों से उन के विभागों का जायज़ा लिया और बसीरत अफ़रोज़ हिदायात और उपदेश दिए। हमारे प्यारे इमाम ने नौ-मुबाइनात से मज़बूत राबिता रखने और उन्हें सक्रिय करने के बारे में तलक़ीन फ़रमाई। नई बैअतों को हासिल करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई और इस के लिए दाईआत (दावते इलाल्लाह करनी वालियां) की मदद से भरपूर प्रोग्राम तर्तीब देने की ज़रूरत पर-ज़ोर दिया। हुज़ूर अक़्दस ने लजना की मैंबर्ज़, बच्चीयों और बच्चों की तर्बीयत के अलग-अलग तरीक़ों और माध्यमों की तरफ़ आमिला की तवज्जा स्थानांतरित करवाई। हमारे प्यारे आक़ा ने हर विभाग को अपने कार्यों और बा बरकत नसाएह से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाया और काम को बेहतर से बेहतरीन बनाने पर-ज़ोर दिया।

हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर ने बहुत प्यार और शफ़क़त से सबकी बातें सुनी और मुस्कुरा कर सब का उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अक़्दस का अपने क़ीमती वक़्त को हमारे लिए निर्धारित करना लजना कैनेडा के लिए इंतिहाई मुसर्रत और सौभाग्य का बाइस था। निसंदेह क़ुदरत-ए-सानिया के पांचवें मज़हर को अपने मध्य पा कर हमारी ख़ुशी का कोई ठिकाना न था। एक घंटे की इस बाबरकत मज्लिस का समापन इतनी जल्दी हो जाएगा यह सोचा भी नहीं था। यह अल्लाह तआला का बेहद फ़ज़ल और अहसान है कि उसने हमें ख़िलाफ़त जैसी अज़ीमुश्शान नेअमत से नवाज़ा और ख़लीफ़ा वक़्त की शक्ल में हमें एक मुहब्बत करने वाला और सब के लिए दर्द-ए-दिल से दुआएं करने वाला बा बरकत वजूद अता फ़रमाया जो इस दज्जाली समय में हम सबकी दीनी वदुनयावी रहनुमाई करते हैं।

मुलाक़ात के दिन हम सबने सदक़ा अदा किया, नफ़ल पढ़े और मुलाक़ात के वक़्त से पहले निर्धारित स्थान पर पहुंचे। यह मुबारक ऑनलाइन मुलाक़ात हमारी आशाओं से कहीं ज़्यादा बढ़ कर ख़ुशी संतुष्टि का कारण थी और ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे हमारे प्यारे इमाम सय्यदना हुज़ूर अनवर हमारे साथ रौनक अफ़रोज़ हैं।

**मुलाक़ात में शामिल होने वालों के प्रतिक्रिया**

इस मुलाक़ात के बाद समस्त मेमब्रात-ए-आमिला ख़ुशी, शुकर और एहसास ज़िम्मेदारी की भावना से मामूर थीं। कुछ मेमब्रात की प्रतिक्रिया निमंलिखित हैं

★ सैक्रेटरी नौ-मुबाइनात ने कहा : जब हुज़ूर अनवर स्क्रीन पर आए तो ऐसे महसूस हुआ जैसे मैं तुरंत एक रुहानी माहौल में दाख़िल हो गई हूँ और एक ख़ास असर ने मुझे चारों तरफ़ से घेर लिया हो। मैंने दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू किया। मुझे आशा नहीं थी कि सय्यदना हुज़ूर-ए-अनवर से इस मुलाक़ात का आरंभ मुझ से करेंगे। जैसे ही हुज़ूर-ए-अनवर ने मुझसे बात करनी शुरू की तो ऐसा लगा कि जैसे यहां कोई और दूसरा मौजूद नहीं है सिवाए मेरे और मेरे आका के। हुज़ूर-ए-अनवर ने जो प्रश्न मेरे ज़हन में था, मेरे पूछने से पहले ही इस पर रह नुमाई फ़र्मा दी। निसंदेह यह सब अल्लाह तआला के निर्धारित करदा इमाम वक़्त की फ़िरासत ही का नतीजा है।

★ सैक्रेटरी ने माल कहा : मीटिंग बहुत ईमान अफ़रोज़ थी। मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत महसूस करती हूँ कि मैंने इस मुलाक़ात से अपने विभाग को बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ सीखा। मेरी ख़ाहिश है कि हम साल में कम अज़ कम एक-बार प्यारे आक़ा से इस तरह मुलाक़ात कर सकें।

★ सैक्रेटरी उमूर-ए- तोलाबा ने कहा : यह मुलाक़ात मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी और अलग घटना थी। यह मुलाक़ात मेरे अंदर रुहानी तबदीली लाने और मेरे प्यारे ख़लीफ़ा वक़्त के साथ मेरी मुहब्बत में इज़ाफ़ा का बायस बनी है।

★ सैक्रेटरी तब्लीग़ ने कहा : प्यारे आक़ा का चेहरा स्क्रीन पर नमूदार हुआ तो मेरा सारा ख़ौफ़ शांति में तबदील हो गया। मुलाक़ात से पहले मेरी हालत एक ऐसे खोए हुए बच्चे की तरह थी जिसे मालूम ही नहीं कि किधर जाना है। मुलाक़ात के बाद मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे प्यारे हुज़ूर ने मुझे रास्ता दिखा दिया ।

★ नायब जनरल सैक्रेटरी ने कहा : ऐसा महसूस हुआ कि जैसे हम अपने


**हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम**

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।**

**तालिबे दुआ**

**Sohail Ahmad Nasir and Family**

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

**1800 103 2131**

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 12 August 2021 Issue No.32

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

महबूब आक़ा के साथ मौजूद हैं और आमने सामने मुलाक़ात हो रही है।

★ सैक्रेटरी नासिरातुल अहमदिय ने कहा अभी तक हम इसी ख़ुशी के अधीन हैं। ख़लीफ़-ए-वक़्त के साथ सब लोगों का बारी-बारी बात करना और उनसे रहनुमाई हासिल करना एक हैरत-अंगेज़ अनुभव था। काश हमें हुज़ूर अक़्दस से मिलने और बात करने के ज़्यादा से ज़्यादा अवसरों मिलें।

★ सैक्रेटरी ख़िदमत-ए-ख़लक़ ने कहा : मैं अपने काम को बेहतर बनाने के लिए अपने अंदर एक नया जोश ओ भावना महसूस कर रही हूँ।

★ मुआविना सदर इंचार्ज आई. टी ने कहा : मेरी ज़िंदगी के बेहतरीन लमहात थे। मैं अब भी इन ही लमहात में जी रही हूँ। अल्लाह हमें सय्यदना हुज़ूर एव नूर की हिदायात पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ सैक्रेटरी इशाअत ने कहा : हुज़ूर अनवर की मुलाक़ात ने यक़ीनी तौर पर हम को पहले से ज़्यादा सख़्त मेहनत करने की तरफ़ राग़िब किया है। इतने कम वक़्त में इतनी ज़्यादा तवज्जा और रहनुमाई नाक़ाबिल-ए-यक़ीन थी। दिल चाहता था कि प्यारे हुज़ूर से बातें करती रहूं और उन की नसाएह और बा-बरकत आवाज़ सुनती रहूँ।

★ मुहासिबा माल ने कहा : एक निहायत भरपूर और रूह प्रवर अनुभव था। मुझे तो महसूस भी नहीं हुआ कि यह वर्चूअल मुलाक़ात थी।

★ सैक्रेटरी तर्बीयत ने कहा : यह एक ऐसा यादगार अनुभव था जिसने मेरे दिल को नम्रता और सादगी, ख़ुशी और शुक्रगुज़ारी की भावना से भर दिया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इस तरह भी मुलाक़ात संभव है। ऐसा लगा जैसे हुज़ूर हमारे मध्य मौजूद हैं। इस मुलाक़ात ने मुझे दीन की ख़िदमत बजा लाने और अपने महबूब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आशाओं पर पूरा उतरने के लिए मज़ीद लगन और मेहनत के साथ काम करने का हौसला दिया है।

अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को लंबी सेहत वाली ज़िंदगी अता फ़रमाए। और हमें अपनी ज़िम्मेदारियों को अहसन रंग में अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

(अम्तुल सलाम मलिक, सदर लजना इमाइल्लाह कनेडा)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 4 सितंबर 2020)

☆ ☆ ☆ ☆

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

**ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

## तालिबे दुआ

**मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर( उत्तर प्रदेश)**

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

**(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)**

## तालिबे दुआ

**KHALEEL AHMAD**

**S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)**

पृष्ठ 1 का शेष

यह बात ज़ाहिर है कि बंदे के माध्यम से जिस क़दर अल्लाह तआला का वजूद ज़ाहिर होगा उसी क़दर वह अपने नेक उद्देश्य में सफ़ल होगा।

हाँ जब दूसरों के लिए यह शब्द आए तो उस वक़्त उनके पद अनुसार उस शब्द के अर्थ होंगे। एक आला दर्जा का मौमिन यह शब्द प्रयोग करेगा तो उस के यह अर्थ होंगे कि वे कमज़ोरियाँ जो हुसूल-ए-कमाल से वंचित करती हैं उनसे मुझे बचा ले। मध्य स्तर के मौमिन के लिए यह शब्द प्रयोग होगा तो उस के यह अर्थ होंगे कि मेरी गलतियों को ढाँप कर मुझे उच्चतम प्रगतियों की तौफ़ीक़ दे और आम मौमिन यह शब्द प्रयोग करे तो यह अर्थ होगा कि मेरे क़दम को ईमान पर इस्तिक़लाल से क़ायम रख। मेरे गुनाह मुझे कहीं ले न डूबें और एक सच्चाई को तलाश करने वाला यह शब्द प्रयोग करे तो इस के यह अर्थ होंगे कि मेरे गुनाह मुझे हिदायत पाने से वंचित न कर दें इस लिए मेरे गुनाह माफ़ कर। इस शब्द का प्रयोग अलग-अलग अवसरों के लिहाज़ से ऐसा ही है जैसे جَبَّار का शब्द है कि जब अल्लाह तआला के लिए आता है तो उस के अर्थ मुस्लेह के होते हैं और जब यही शब्द बंदे के लिए आता है तो उस के अर्थ सरकश और क़ानून तौड़ने के होते हैं। याद रखना चाहीए कि अल्लाह तआला अपने नबियों की निसबत फ़रमाता है اَللّٰهُ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ तो जब अल्लाह तआला उनको चुन लेता है तो फिर उनमें गुनाह कहाँ से आ सकता है। जब वह दुनिया से अलग करके ख़ुदा तआला के क़ुरब में बिठा दीए गए तो फिर उनके पास शैतान कहाँ से आएगा। शैतान तो ख़ुदा तआला के नाम से भी भागता है। इसी तरह दूसरी जगह फ़रमाया है اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ मेरे बंदों पर निसंदेह तुझे कोई नियंत्रण हासिल नहीं। अत: जब क़ानून यह है कि जो छोटी उबूदीयत के स्थान पर हो अल्लाह तआला उसे भी शैतान के चंगुल से सुरक्षित रखता है तो अल्लाह के नबी जो अल्लाह तआला की विशेष हिफ़ाज़त में होते हैं उनके पास शैतान का गुज़र कैसे हो सकता है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 489 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

पृष्ठ 1 का शेष

अच्छे तरीक़ से आर्गेनाईज़ किया गया। यहां डिसिप्लिन था। मुझे इस बात ने सबसे ज़्यादा प्रभावित किया कि सब लोग, ख़ुदा के निकट बराबर हैं। सब लोग में बर्दाश्त है। मज़ाहिब, क़ौम, भाषा के कारण से आपस में मतभेदों नहीं हैं। एक ग़ैर मुस्लिम की हैसियत से यह बात मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण है। उन्हों ने कहा कि आपका यह संदेश कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" लोगों के आपस में ताल्लुक़ात को क़ायम रख सकता है और इसी के माध्यम से इन्सानियत क़ायम रह सकती है। मुझे यह माटो बहुत पसंद आया है। आपकी भविष्य में सफ़लता का आशावादी हूँ।

मेसीडोनिया से आने वाले दल के एक और मेहमान Aki Akiov (आकी अकेवो साहिब) ने कहा : इस जलसा में शामिल हो कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मेरी आशाएं पूरी हुईं। मैं मुस्लमान हूँ और अब मैं जमाअत अहमदिया में शामिल होना चाहता हूँ।

मेसीडोनिया से आने वाली एक मेहमान Sabina Ramadanova (सबीना रमग़ानवा साहिबा) ने कहा : मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ। जलसे का सबसे पहला प्रभाव जो मुझ पर हुआ है वह जमाअत के इन कार्यकर्ताओं का था जो वहां काम कर रहे थे। वह प्रत्येक का ध्यान रख रहे थे। मेहमानों की बहुत अच्छे तरीक़ से मेहमान-नवाज़ी की गई।

उन्हों ने कहा रिहायश के इंतिज़ामात अच्छे थे। परन्तु रिहायश जलसा की जगह से दूर थी और हमें पर्याप्त इंतिज़ार करना पड़ा। यदि रिहायश जलसा के क़रीब होती तो हम गर्मी से इतने बेहाल न होते और तक़ारीर को ज़्यादा ध्यान से सुनते और थके हुए न होते क्योंकि हाल में आने के बाद इस बात की फ़िक्र होती कि फ्रेश हों और कुछ खाएं पिएं। तथा उन्हों ने कहा जो लोग जलसा पर पहली बार आते हैं, उनका विशेषता ध्यान रखा जाना चाहिए और उन्हें सब कुछ अच्छी तरह बताया जाए। वह पहले इस्लाम से परिचित हों और फिर उन्हें मज़ीद वज़ाहत की जाए ताकि वह इस्लाम स्वीकार कर लें। (शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad